Delhi Postal Regd. No. DL© -01/1272/2021-23 R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

जका घड़ी जाय तका, फिर पाछी नहीं आय। जो घड़ी एक बार चली जाती है, वह लौटकर नहीं आती।

नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 49 • 18 सितम्बर-24 सितम्बर, 2023 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 16-09-2023 • पेज 16 • ₹10 रुपये

संवत्सरी महापर्व

खामेमि सव्वजीवे,
सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती में सव्वभूएसु,
वेरं मज्झ न केणई।।

बारंबार खमत-खामणं

संवत्सरी के पावन अवसर पर गत वर्ष में हुई ज्ञात अज्ञात भूलों हेतु बारम्बार खमतखामणा

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18 सितम्बर-24 सितम्बर 2023

जहां अहिंसा होती है, संयम होता है, वहां पर्यावरण की सुरक्षा स्वत: हो सकती है। बिजली, पानी का अपव्यय नहीं करना चाहिए।

-आचार्यश्री महाश्रमण

भगवती सूत्र-विवेचना

राग और मोह भाव से बचने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमणजी

■ स्नेह का भाव, राग का भाव कभी दु:खी भी बना सकता है ■ मृत्यु किसी के वश में नहीं होती। संयोग होता है, उतना ही साथ मिल सकता है

आचार्यश्री महाश्रमणजी को भगवती सूत्र के सातवें खंड की प्रथम प्रति लोकार्पित करने हेतु निवेदन करते हुए जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगण

04 सितम्बर, 2023
नन्दनवन-मुम्बई

महामनीषी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्र की विवेचना कराते हुए फरमाया कि भगवान महावीर राजगृह में विराजमान हैं। परिषद देशना सुन लौट गई थी। भगवान ने गौतम स्वामी से कुछ वार्तालाप किया। गौतम स्वामी भी भगवान के बहुत निकट रहने वाले थे। गौतम स्वामी प्रथम कोटि के संत थे।

गौतम स्वामी एक बार अधीर होकर बोले- भगवन्! मेरे द्वारा दीक्षित साधुओं को केवलज्ञान हो रहा है, पर मैं अभी तक छद्मस्थ ही बैठा हूं। भगवान ने संबल प्रदान कराते हुए फरमाया- हे गौतम! तुम्हारे साथ मेरा पुराना संसर्ग है। मुझसे चिरकाल से परिचित और प्रीतिपरायण रहे हो। पीछे के जन्म में भी तुम मेरे प्रति प्रेम रखने वाले रहे हो। हमारा कई जन्मों का सम्बन्ध है। तुम्हारा यह जो स्नेह-राग भाव है, वही राग भाव केवल ज्ञान की प्राप्ति में अवरोध पैदा कर रहा है। वह मोह का ही एक अंश है। मेरे जाने के बाद तुम्हें भी केवलज्ञान की प्राप्ति होगी।

राग भाव के भी अनेक स्तर होते हैं। जैसे प्रशस्त राग-अप्रशस्त राग। मोक्ष की प्राप्ति में प्रशस्त राग भी बाधक बन जाता है। भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए तो गौतम का राग भाव भी हटा और वे भी केवलज्ञानी बन गये।

इससे यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि अधिक राग और मोह भाव से बचने का प्रयास करना चाहिए। स्नेह का भाव, राग का भाव कभी दु:खी भी बना सकता है। माता-पिता के सामने पुत्र चला जाता है। युवावस्था में पत्नी के सामने पति चला जाता है। मोह का भाव भी आ सकता है। मृत्यु किसी के वश में नहीं होती। संयोग होता है, उतना ही साथ मिल सकता है। ऐसी स्थिति में आदमी को यह धैर्य व साहस रखने का प्रयास करना चाहिए।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित भगवती सूत्र के सातवें खंड की प्रथम प्रति जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगण आदि द्वारा पूज्यवर को निवेदन करते हुए लोकार्पित की गई। पूज्यवर ने फरमाया कि पूज्य कालूगणी ने भी भगवती सूत्र पर व्याख्यान किया था। पूज्य जयाचार्य ने तो अनेक राग-रागनियों में भगवती जोड़ की रचना राजस्थानी काव्य में की थी। भगवती सूत्र में अनेक विषय मिलते हैं। आज भगवती जैसे विशालकाय आगम का यह सातवां खंड प्रकाशित होकर आया है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के समय से आरम्भ हुआ आगमों का यह कार्य आज भी चल रहा है। किसी समय महासभा आगमों के प्रकाशन का कार्य करती थी, किन्तु अब जैन विश्व भारती आगमों, ग्रंथों आदि के प्रकाशन का काम करती है। इसमें साधु-साध्वियों और श्रावक समाज का भी योगदान है। बहुश्रुत परिषद के पूर्व संयोजक मुनि महेन्द्रकुमारजी के साथ के संतों का श्रम रहा है। संत और भी निर्जरा का काम करते रहें। मुनि अभिजीतकुमारजी ने भगवती सूत्र के सातवें खंड के बारे में अपने अभिव्यक्ति दी।

पूज्यवर ने खुशबू चिंडालिया को ६६ की तपस्या एवं अन्य तपस्वियों को उनकी तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

गुरुदेव ठिकाणा सेवा के संयोजक अविनाश इंटोदिया ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए अपनी टीम के साथ गीत का सुमधुर संगान किया। उन्होंने गीत के माध्यम से पूज्यवर को चरणस्पर्श शुरू करवाने का सविनय निवेदन किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

राग-द्वेष के विकारों को दूर रखकर बोलने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

■ किसी को जानना ज्ञान और देखना दर्शन हो जाता है। ■ मांग करने वाला मांग कर सकता है, पर देने वाला दे या न दे या जितनी इच्छा हो, उतना दे सकता है।

मुख्य प्रवचन में आगमवाणी का रसास्वादन कराते हुए परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी

06 सितम्बर, 2023
नन्दनवन-मुम्बई

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगमवाणी की अमृत वर्षा कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में छद्मस्थ केवली से संदर्भित अनेक प्रश्न पुछे गये हैं। प्रश्न किया गया- भन्ते! केवली छद्मस्थ को जानता है और देखता है क्या? उत्तर दिया गया- केवली सर्वत्र होता है, वह सब कुछ जानता-देखता है।

दूसरा प्रश्न किया गया कि भन्ते! क्या सिद्ध भी छद्मस्थ को जानता-देखता है क्या? उत्तर दिया गया कि सिद्ध भी छद्मस्थ को जानता-देखता है। किसी को जानना ज्ञान और देखना दर्शन हो जाता है। सामान्य बोध अनाकार दर्शन है। विशेष बोध साकार उपयोग है, वह ज्ञान है, जानना है। केवली एक समय पर देखता है और एक समय पर जानता है। इस संदर्भ में ज्ञान भी निरंतर नहीं है, दर्शन भी निरंतर नहीं है। इस तरह ज्ञानदर्शन का क्रम चलता है।

आगे प्रश्न किया गया कि क्या केवलज्ञानी परमावधियों को भी जानता-देखता है? उत्तर दिया गया कि केवली परमावधि ज्ञानी, केवलज्ञानी व सिद्ध को भी जानता-देखता है। प्रश्न किया गया कि केवलीज्ञानी बोलते हैं क्या? उत्तर दिया गया- हां, वे बोलते हैं, व्याकरण करते हैं। पुन: प्रतिप्रश्न किया गया कि क्या सिद्ध भी बोलते हैं, व्याकरण करते हैं? उत्तर दिया गया- नहीं, यह अर्थ समर्थ नहीं है। केवली मनुष्य में उत्थान, वीर्य, कर्म, पराक्रम, बल होता है, इसलिए वे बोलते हैं, व्याकरण करते हैं। सिद्धों में यह सब नहीं होते, इसलिए वे नहीं बोलते।

सिद्ध हमारे लिए प्रणम्य हैं, पर अर्हत हमारे लिए उपयोगी होते हैं। वे प्रवचन करते हैं। मांग करने वाला मांग कर सकता है, पर देने वाला दे या न दे या जितनी इच्छा हो, उतना दे सकता है। सिद्धों के गुण हमारे में आ जायें तो हमें आरोग्य-बोधि, समाधि की प्राप्ति हो सकती है। सिद्धों की भक्ति करना भी विशेष बात है, वह हमारी कर्म निर्जरा का साधन बन सकती है।

बोलने की शक्ति भी एक लब्धि है। अनेक जीवों के पास यह लब्धि नहीं होती है। केवली की वाणी में राग-द्वेष के भाव नहीं होते। छद्मस्थ के राग-द्वेष हो सकता है। मनुष्य को भी केवली से प्रेरणा लेकर राग-द्वेष के विकारों को दूर रखकर बोलने का प्रयास करना चाहिये। राग-द्वेष से मुक्त होकर बोलने से वीतरागता भी पुष्ट हो सकती है। हम भी वीतरागता युक्त भाव से बोलने का प्रयास करें।

कालूयशोविलास का विस्तार से विवेचन करते हुए आचार्यवर ने पूज्य कालूगणी के अंतिम समय के प्रकरण का विस्तार से वर्णन किया। पूज्यवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने फरमाया कि अठारह पापों में एक पाप है- 'माया मृषा शल्य'। यह एक महापाप है, संताप पैदा करने वाला है। माया आग है और मृषा रूपी घी का सिंचन हो जाता है तो पाप गाढ़े हो जाते हैं। यह पाप गुणों का नाश करने वाला होता है। हम इस माया मृषा पाप को छोड़ने का प्रयास करें।

तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा शिक्षक दिवस के उपलक्ष में प्रस्तुति दी गई एवं गीत से पूज्यवर का वर्धापन किया गया। नन्हे से बालक प्रबल कोटड़िया ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

आचार्य प्रवर के सान्निध्य में चतुर्थ प्रशासनिक अधिकारी सम्मेलन आयोजित

जीवन में नैतिकता-ईमानदारी का आना भी धर्म ही है : आचार्यश्री महाश्रमण

०९ सितम्बर २०२३,
नंदनवन मुंबई

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्र की विवेचना करवाते हुए फरमाया कि एक बार प्रथम देवलोक का इन्द्र शक्र भगवान महावीर के पास पहुंच जाता है, पर्युपाषना करता है, धर्म कथा होती है। वह इन्द्र धर्म सुनकर हष्ट-पुष्ट हुआ। वन्दन नमस्कार कर प्रश्न पुछता है कि भन्ते! अवग्रह कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है?

भगवान महावीर ने उत्तर दिया कि अवग्रह पांच प्रकार के होते हैं- देवेन्द्र अवग्रह, राज अवग्रह, गृहपति अवग्रह, सागरिक अवग्रह और साधर्मिक अवग्रह। प्रथम देवलोक के इन्द्र के अधिकार की जो भूमि होती है, वह देवेन्द्र अवग्रह होती है। चक्रवर्ती के अधिकार की भूमि राज अवग्रह होती है। छोटा मांडलिक राजा के अधिकार का क्षेत्र गृहपति अवग्रह होता है। गृहस्थ के अधिकार की भूमि सागरिक अवग्रह होती है। साधु-साधु का अपना विधान होता है,

टीपीएफ द्वारा आयोजित कान्फ्रेंस में प्रशासनिक अधिकारियों को प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी

वह साधर्मिक अवग्रह है। साधु-साध्वियों के चातुर्मास व शेषकाल की अलग- अलग विधा होती है।

शक्र जंबू द्वीप के दक्षिणी भाग भरत क्षेत्र के अधिकारी होते हैं। साधु तो अपरिग्रह का धारक होता है। कोई मकान, पैसा उनके पास नहीं होता है। साधु तो अकिंचन है, लेकिन किन्हीं प्रमाणों के आधार पर वह तीन लोक का मालिक होता है। कारण उसने सब कुछ छोड़ दिया। जिसके पास कोई आगार नहीं होता, वह अनगार साधु होता है। अनगार के सामने दुनिया की सारी डिग्रियां ना-कुछ सी होती हैं। यह साधु का त्याग है। साधु तो निर्वग्रह होता है। साधु की जिंदगी से साधुता न जाये।

गृहस्थ साधु-साध्वियों को प्रवास हेतु अपना मकान देते हैं, आहार आदि देते हैं तो उनका अपने अवग्रह के प्रति मोह कम हो जाता है, जिससे उनकी आत्मा का कल्याण की दिशा में प्रस्थान हो सकता है। त्यागियों के गृहस्थ की चीज काम आये तो अच्छा काम हो सकता है।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास की विवेचना कराते हुए पूज्य कालूगणी के महाप्रयाण के पश्चात माजी महाराज छोगांजी की व्यथा और बाद में उनके संभल जाने के प्रसंग को व्याख्यायित किया। कालूगणी की शोभायात्रा के प्रसंग का भी वर्णन किया। पूज्यवर ने कालूयशोविलास व्याख्यानमाला को संपन्न कराते हुए फरमाया कि भाद्रपद शुक्ला नवमी को तेरापंथ नवम आचार्य पद पर आचार्यश्री तुलसी का पदारोहण हुआ।

पूज्यवर के सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा 'जैनिज्म वे ऑफ लाईफ' विषय पर आयोजित चतुर्थ प्रशासनिक अधिकारी सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें देश भर से काफी संख्या में प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित हुए। अशोक कोठारी ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया। पराग जैन एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। कुछ प्रशासनिक अधिकारियों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

पूज्यवर ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में दो तत्त्व जीव और अजीव हैं। दुःख मुक्ति के लिए धर्म-अध्यात्म की साधना करें। अहिंसा, संयम और तप के रूप में जैनिज्म वे ऑफ लाईफ को समझने का प्रयास करें। काम और क्रोध आदमी को पाप की ओर ले जाता है। प्रशासनिक क्षेत्र में कार्य करने वाले धर्म को भी जीवन में लाने का प्रयास करें। कर्म के साथ धर्म को जोड़ दें। जीवन में नैतिकता-ईमानदारी आ जाए तो भी एक प्रकार का धर्म ही है। अहिंसा का पालन हो। खानपान व वाणी का संयम हो। नशामुक्त जीवन जीने का प्रयास हो। आचार्यश्री ने अधिकारियों को कुछ क्षण प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी कराया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

कष्ट की स्थितियों में भी समता का भाव रखें : आचार्यश्री महाश्रमण

■ जिन जीवों के मन होता है, शोक उन्हीं के होता है। ■ समस्या से आक्रांत न हों, धर्म की शरण में रहें।

सुख दुःख की विवचेना कराते हुए परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी

८ सितम्बर, २०२३
नन्दनवन-मुम्बई

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जिनवाणी की अमृत वर्षा कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से प्रश्न किया कि भन्ते! क्या जीवों को जरा और शोक होता है? उत्तर दिया गया कि गौतम! जीवों के जरा भी है और शोक भी है। हमारी दुनिया में प्राणियों को दुःख भी प्राप्त होता है। भवगती सूत्र के आलोक में दुःख को दो भागों में बांटा जा सकता है- जरा और शोक। संसार में जरा, रोग, मृत्यु, शोक आदि दुःख हैं। जरा शारीरिक दुःख है तो शोक मानसिक दुःख होता है। जरा यानि बुढ़ापा। आदमी जब बुढ़ा होता है तो उसे शारीरिक रूप से अनेक प्रकार के कष्ट आ सकते हैं। युवावस्था में श्रम करने वाला, कड़ी मेहनत करने वाला शरीर बुढ़ापे में दुःख देने लगता है। प्रियजनों की मृत्यु या किसी वेदना के द्वारा व्यक्ति को जो मानसिक कष्ट होता है, वह शोक होता है। जिन जीवों के मन होता है, शोक उन्हीं के होता है। जरा तो सभी संसारी जीवों के हो सकती है।

आदमी के जीवन में शारीरिक-मानसिक कष्ट की स्थितियां आ सकती है, पर आदमी इन स्थितियों में भी सम रहे, समता का भाव रखें। समस्या या कष्ट आने पर भी शांत रहे। समस्या से आक्रांत न हों, धर्म की शरण में रहें। साधु तो हर स्थिति को सहन करे। समता से सहन करने पर दुःख भी महान फल देने वाला बन सकता है। गृहस्थ भी समता भाव रखे। चाहे व्यापार हो, परिवार हो, समाज हो, संतोष रखे। आर्तध्यान में न जायें। समता रखो, सहन करो। हम समनस्क हैं, हमारे जरा-शोक हो सकता है, पर समता का भाव रखें। पूज्यवर ने कालूयशोविलास की विवेचना कराते हुए पूज्य कालूगणी के महाप्रयाण के पश्चात पार्थिव देह को श्रावकों को सौंपने तथा पूरे देश में टेलीग्राम से महाप्रयाण की सूचना पहुंचने और लोगों के संतप्त होने व गंगापुर पहुंचने की स्थिति का सविस्तार वर्णन किया।

पूज्यवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये। राकेश मांडोत, चेन्नई द्वारा १० गीत की कैसेट का सेट पूज्यवर के सान्निध्य में लोकार्पित किया गया। राकेश मांडोत ने गीत के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी।

अहमदाबाद से संघ पूज्यवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। तेरापंथी सभा, अहमदाबाद के अध्यक्ष कांतिलाल चोरड़िया एवं सन् २०२५ के लिये आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास व्यवस्था समिति, अहमदाबाद के नवनियुक्त अध्यक्ष अरविंद संचेती ने अपनी भावना अभिव्यक्ति की।

पूज्यवर ने अहमदाबादवासियों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए सन् २०२५ के लिये आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास व्यवस्था समिति, अहमदाबाद के नवनियुक्त अध्यक्ष अरविंद संचेती को मंगलपाठ सुनाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जैन धर्म की संस्कृति त्याग और तप की संस्कृति

पखवाड़ा तप अभिनंदन

कानपुर

साध्वी संगीतश्रीजी के पावन सान्निध्य में तपस्विनी बहन सुधा बच्चा के १५ दिन (पखवाड़े) की तपस्या के अभिनंदन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्रीजी के महामंत्रोचार से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष दिलीप मालू एवं पूनमचंद सुराणा ने तपस्वी की अनुमोदना स्वरूप अपने विचार और गीतिका प्रस्तुत की। तपस्वी सुधा बुच्चा के परिवार की ओर से राजकुमार बुच्चा तथा शालिनी बुच्चा ने अपने विचार रखे। तपस्विनी बहिन की सहेलियों ने मधुर गीतिका का संगान किया। तेयुप के युवाओं ने एक सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति दी।

साध्वी संगीतश्रीजी ने अपने वक्तव्य में तपस्या के महत्व को उजाकर करते हुए फरमाया कि जैन धर्म की संस्कृति त्याग और तप की संस्कृति है। हम सभी बहुत भाग्यशाली हैं कि हमें आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महातपस्वी आचार्य मिले हैं। गुरु दृष्टि प्राप्त दृढ़ शक्ति वाले व्यक्ति ही तपस्या कर सकते हैं। साध्वी मुदिताश्रीजी ने फरमाया कि रस इंद्रियों पर विजय पाना बहुत ही कठिन काम है। साध्वी कमलविभाजी ने तपस्वी बहन सुधा के नाम का अर्थ अमृत बताते हुए फरमाया कि साधु ने तपस्या रूपी अमृत कानपुर में फैला दिया है। तप के द्वारा व्यक्ति अपने कर्मों का क्षय कर आत्मा को निर्मल बनाता है। साध्वी शांतिप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में फरमाया कि जिस प्रकार सौंदर्य प्रसाधनों से बाहर की त्वचा को सुंदर बनाया जा सकता है, उसी तरह आत्म उत्थान के लिए तप बहुत आवश्यक है। साध्वीवृंद ने तपस्या के भावों से ओत-प्रोत स्वरचित गीतिका का संगान कर उपस्थित श्रावकों को भाव विभोर कर दिया।

परिवार के सदस्यों ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए बताया कि साध्वीश्री के श्रम और प्रेरणा से ही कानपुर में दो पखवाड़ों के साथ अन्य तपस्याओं का अच्छा क्रम चल रहा है। तपस्विनी बहिन को सम्मान स्वरूप तेरापंथी सभा द्वारा प्रशस्ति पत्र और साहित्य प्रदान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री संदीप जम्मड़ ने किया। तपस्विनी बहिन ने साध्वीश्री से पखवाड़े के दिन के तप का प्रत्याख्यान किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
है प्रभो! यह तेरापंथ
18 सितम्बर-24 सितम्बर 2023

जिसकी जैसी भावना होती है, वैसे ही कर्मों का बंध हो जाता है और परिणामस्वरूप वैसा ही फल भोगना पड़ ता है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

लोगस्स कल्प अनुष्ठान

जीवन जीने के लिए बैंक बैलेंस जितना जरूरी है, उससे अधिक जरूरी ब्रेन बैलेंस रखना है।

रोहिणी, दिल्ली

शासनश्री साध्वी संघमित्राजी व शासनश्री साध्वी ललितप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद्, दिल्ली के तत्वावधान व श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, रोहिणी के सहयोग से लोगस्स कल्प अनुष्ठान का भव्य कार्यक्रम महाश्रमण सभागार में रखा गया। इस अनुष्ठान में २५० से अधिक जोड़ों की उपस्थिति रही। साध्वीश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा - 'जीवन जीने के लिए बैंक बैलेंस जितना जरूरी है, उससे अधिक जरूरी ब्रेन बैलेंस रखना है। मंत्र जप से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। लोगस्स चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति है। तीर्थंकरों की स्तुति करने का तात्पर्य है वीतरागता की दिशा में प्रस्थान। तीर्थंकरों की स्तुति से कर्मों की निर्जरा होती है, आत्मविशुद्धि होती है। भक्ति में शक्ति होती है। भक्ति से शक्ति का जागरण होता है। लोगस्स की साधना आत्म जागरण की साधना है, इससे आनन्द का जागरण एवं परमात्म स्वरूप का जागरण होता है।'

विजयगीत से कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष व महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड, दिल्ली तेरापंथी सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, रोहिणी तेरापंथी सभाध्यक्ष विजय जैन एवं तेयुप दिल्ली मंत्री अमित डूंगरवाल ने विचारों की प्रस्तुति दी। शासनश्री शीलप्रभाजी, डॉ॰ साध्वी सूरजयशाजी, साध्वी समाधिप्रभाजी व साध्वी ओजस्वीप्रभाजी के सार्थक श्रम ने इस अनुष्ठान को प्रभावी बनाया। रोहिणी तेरापंथी सभा मंत्री राजेन्द्र सिंघी, तेयुप परामर्शक संजीव जैन, तेयुप अध्यक्ष विकास चोरड़िया आदि का विशेष सहयोग रहा। तेरापंथी सभा एवं तेयुप के सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। मंच का संचालन तेयुप क्षेत्र संयोजक शुभम जैन एवं आभार ज्ञापन तेयुप सहसंयोजक नवीन जैन ने किया।

अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन

बारडोली

अणुव्रत समिति, बारडोली के तत्वावधान में उका तरसाड़िया युनिवर्सिटी स्थित मालिबा फार्मेसी कॉलेज में अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अणुव्रत विश्व भारती के गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल ने 'सामाजिक विकास में मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता का महत्व' विषय पर उपयोगी मार्गदर्शन देते हुए अपने वक्तव्य में कहा- 'किसी भी समाज या देश की प्रगति का आधार है, उस समाज या देश की जनता का चरित्र। समाज की सबसे छोटी इकाई है व्यक्ति। यदि समाज का विकास करना है तो उस समाज के हर व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास हो, यह आवश्यक है। हमारे देश को भव्य सांस्कृतिक विरासत प्राप्त है। यहां विविध धर्म के लोग एक दूसरे के साथ हिलमिल कर रहते हैं। 'विविधता में एकता' और 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' जैसे सूत्र हमारी भव्य संस्कृति के प्रतिबिंब हैं। सदियों की गुलामी के बाद हमारा देश सन् १९४७ में आजाद हुआ। लगभग उसी समय के आस-पास सन् १९४९ में महान चिंतक, राष्ट्र संत आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत अहिंसा, ईमानदारी, स्वावलंबन, भाईचारा, परोपकार, सांप्रदायिक सद्भाव, रूढ़ि उन्मूलन, व्यसन मुक्ति, पर्यावरण सुरक्षा आदि का संदेश देता है। आज के विद्यार्थी भविष्य के नागरिक हैं। इस देश और समाज का भविष्य उनके ही हाथों में आने वाला है। इसलिए हमारे देश के बच्चों और विद्यार्थियों का सतत व्यक्तित्व विकास होता रहे, यह आवश्यक है। इस देश और समाज का भविष्य उज्ज्वल तभी बन सकता है, जब हमारे भावी नागरिक उपरोक्त मानवीय मूल्यों को अपनाएं एवं उनकी सुरक्षा के लिए कटिबद्ध बनें।

यदि समाज का विकास करना है तो उस समाज के हर व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास हो, यह आवश्यक है।

अणुव्रत विश्व भारती के पश्चिमांचल क्षेत्रीय संगठन मंत्री पायल चोरड़िया ने मुख्य वक्ता अर्जुन मेड़तवाल का परिचय दिया। मालिबा फार्मेसी कॉलेज के प्राचार्य आशीष मिश्रा ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने छात्रों के चरित्र विकास के लिए नैतिक मूल्यों को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। प्रोफेसर राहुल भाई का भी अनुमोदनीय सहयोग प्राप्त हुआ। अणुव्रत समिति, सूरत के पूर्व अध्यक्ष जयंतीलाल कोठारी ने छात्रों को हास्य के प्रयोग करवाए तो सभी आनंद से सराबोर हो गए।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति, बारडोली के अध्यक्ष राजेश चोरड़िया, मंत्री सुभाष हिंगड़, संगठन मंत्री संजय बड़ोला, तेरापंथ महिला मंडल बारडोली की अध्यक्षा धर्मिष्ठा मेहता आदि उपस्थित रहे।

'क्षमा वीरस्य भूषणम्'

-साध्वी स्वर्णरेखा

स्नेह का अर्जन है- क्षमा

धरती का विशाल आंगन अनेक संपदाओं से भरा हुआ है। कहीं जल का बहाव है, कहीं अग्नि की प्रचुरता है, कहीं नीला आकाश धरती से अभिन्नता रखता हुआ दिखाई देता है तो कहीं लहराती वनस्पति संजीवनी बूटी की याद दिलाती है। प्रेंति की संपदाओं को मनुष्य हर क्षण बटोरता नजर आता है। वह स्वयं के भीतर देखने का प्रयत्न नहीं करता कि कितने सद्गुणों के उपजाऊ बीज भरे हुए हैं। इस गुणवत्तायुक्त बीजों को बोने से ही मैत्री, प्रमोद, करुणा, मध्यस्थता की फसल लहराने लगती है। जब तक मैत्री का बीज वपन नहीं करेंगे, शत्रुता के भाव आएंगे, प्रमोद भावना का बीज नहीं बोएंगे तो ईर्ष्या के भाव आएंगे, करुणा की खेती शुरू नहीं की तो घृणा, द्वेष के भाव आएंगे। ये भीतर के मल हैं, जैसे ही क्षमा का उदय होता है, जीवन मालामाल हो जाता है।

क्षमा देने एवं लेने से लघुता का संचार होता है। लघुता आने के पश्चात् व्यक्ति सभी जीवों को आत्मवत् मानने लगता है। स्वयं के दांतों से जीभ कुचल जाती है तो दांतों को निकाल कर फेंकते नहीं, पैर से पैर को ठोकर लग गई तो पैर को दंडित नहीं करते...

रेलवे लाइन पर लोहे का पुल बनाना आसान है, दो भवनों को जोड़ने वाला लकड़ी का पुल बनाना भी आसान है, परन्तु दो व्यक्तियों के दिल को जोड़ने वाला मैत्री का पुल बनाना कठित नहीं कठिनतम है क्योंकि मैत्री के पुल में वात्सल्य एवं प्रेम की ईंटें एवं विनम्रता की सीमेंट की जरूरत है, जो आज के युग में दुर्लभतम बनी हुई है। जैसे गांव, नगर, महानगर में हीरे-जवाहरात की दुकानें अन्य दुकानों की अपेक्षा कम ही होती हैं वैसे ही क्षमा को धारण करने वाले हलुकर्मीमनुष्य कम ही दिखाई देते हैं। क्षण-क्षण में क्रोध का उबाल वैर में परिणत होकर जीवन को रेगिस्तान बना देता है।

वैर भीतर का ऐसा वायरस है, जो एक जन्म में नहीं न जाने कितने जन्मों तक बदला लेता रहता है। कोरोना वायरस तो बाहर से अदृश्य रूप से आकर चिपकता है और भीतर फेफड़ों तक जाते ही जीवन लील लेता है। वैर का वायरस भीतर से ही पैदा होता है और भीतर इतना ऐंठ एवं पैठ जाता है कि कितने भवों को बिगाड़ देता है। इसे गरम पानी की जरूरत नहीं, क्षमा रूपी ठंडे पानी की आवश्यकता है। क्षमा के पानी से कुरगडुक, गजसुकुमाल, मेतार्य मुनि, मृगावती आदि केवलज्ञानी बनकर मोक्ष मार्ग के पथिक बन गए।

भगवान महावीर तीर्थंकरों ने क्षमाधर्म को अपनाकर स्वयं की आत्मा को तारने के साथ चंडकौशिक आदि अनेक खूंखारों का भी उद्धार कर दिया। वर्तमान में तीर्थंकर अतुल्य क्षमाशूर आचार्यश्री महाश्रमणजी समता की स्रोतस्विनी बहाकर अनेकानेक जीवों का कल्याण कर रहे हैं।

महाभारत के वनपर्व में कहा है 'क्षमाधर्मः, क्षमायज्ञः, क्षमावेदाः, क्षमाश्रुतम्' क्षमा ही धर्म है, यज्ञ है, वेद है, ज्ञान है। यह ऐसा ज्ञान जो जोड़ने का काम करता है। मकान को जोड़ने के लिए दीवार चाहिए, कपड़े को जोड़ने के लिए सूई-धागा, कागज को जोड़ने के लिए गोंद, लकड़ी को जोड़ने के लिए फेविक0ल, हड्डी को जोड़ने के लिए प्लास्टर-सर्जरी की आवश्यकता है तो दिल टूट गया, मन रूठ गया, हृदय फट गया उसे जोड़ने के लिए क्षमा की जरूरत है। क्षमा मनुष्य को महान बनाती है, इसलिए कहा है- 'क्षमा वीरस्य भूषणम्'। गलती करना मनुष्य का स्वभाव है, पर स्वयं की गलती को सुधारने के साथ दूसरों की गलती को क्षमा करता है, वह भगवान बन जाता है। जो ईंट का जवाब पत्थर से, थप्पड़ का जवाब मुक्के से, गाली का जवाब गोली से देता है, वह न भीतर से ऊपर उठ सकता है, न व्यवहार जगत् को सुंदर बना सकता है।

क्षमा देने एवं लेने से लघुता का संचार होता है। लघुता आने के पश्चात् व्यक्ति सभी जीवों को आत्मवत् मानने लगता है। स्वयं के दांतों से जीभ कुचल जाती है तो दांतों को निकाल कर फेंकते नहीं, पैर से पैर को ठोकर लग गई तो पैर को दंडित नहीं करते, हाथ से आंखों में लग गई तो उन्हीं हाथों से उसका उपचार शुरू कर देते हैं, पैरों में कांटा चुभ जाए तो आंखों को सजा नहीं देते क्योंकि शरीर के हर अवयव के साथ हमारा अपनत्व है, अपनापन है। यदि यही अपनापन विश्व के सभी जीवों के प्रति हो जाए तो राग-द्वेष की भावना विस्तार को प्राप्त नहीं करती है।

जैन धर्म का महान् पर्व- क्षमायाचना। क्षमा वैर का विसर्जन है, स्नेह का अर्जन है, हृदय की विशालता एवं विशुद्धता को मापने का मापदंड है। शत्रुता को नापने का थर्मामीटर है। शत्रु बुरा नहीं, बुरी है भीतर में रही हुई शत्रुता। मनुष्य का मनोमालिन्य मन कषाय के कारण लड़ाई-झगड़ा कर लेता है, घर में कलह मच जाती है। यह कलह सुबह से शाम तक सुलझ गई, बोलना शुरू हो गया तो वैर आगे नहीं बढ़ेगा। जैसे ही बोलचाल बंद होती है जाने-अनजाने शत्रुता का दावानल भीतर से भड़कने लगता है और इतना भयंकर होता है कि जन्मों-जन्मों तक साथ चलता है, जिससे सम्यक्त्व टिक नहीं पाती। हमारे कांच से भी नाजुक मन को वचन का वजनदार पत्थर चोट करता है, तब वह खंड-खंड बिखरकर खण्डहर में बदल जाता है। बिखरे हुए उस मन को पुनः जोड़कर अखंड बनाने का सोल्यूशन किसी साइंटिस्ट को प्राप्त नहीं है। वह सोल्यूशन हमें प्राप्त है- खमत-खामणा का।

इस खमत-खामणा रूपी दवा से भीतर का दर्द समाप्त हो सकता है। केवल शब्दों से खमत-खामणा का उच्चारण न करें। भीतर में भरी कलुषता में प्रेम की धार बहायें। प्रेम का दरिया ही अन्तर की खुदाई करके बुराई को बाहर फेंक सकता है। हमें बुराई, अवगुणों से भय नहीं है, भय है बाहर के उपद्रव एवं आतंक से, बीमारी से, इसके लिए हम कितना प्रोटेक्शन लेते हैं, सावधानी बरतते हैं लेकिन वैर रूपी इस वायरस के प्रति हमारी कोई सावधानी नहीं है। अतः संवत्सरी के महान पर्व पर आत्मचिंतन करें, आत्ममंथन करते हुए क्षमा दें एवं क्षमा लें। क्षमाशील व्यक्ति चित्त में शान्ति की अनुभूति करता हुआ प्रसन्नता के भावों से सराबोर हो सकता है।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट

गोरेगांव, मुंबई

अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, मुंबई द्वारा 'अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट' के अंतर्गत बुलबुल इंग्लिश मीडियम स्कूल में प्रतियोगिता का सुंदर आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय 'नशा मुक्त भारत' था। प्रतियोगिता में ४३ बच्चों ने सहभागिता की। विद्यालय प्राचार्या मंजु चौधरी, अध्यापक बंसरी, सुलभा आदि ने अणुव्रत समिति द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि अणुव्रत समिति द्वारा चलाए जा रहे इस नशा मुक्ति के अभियान की प्रत्येक विद्यालय में आवश्यकता है। उन्होंने अणुव्रत समिति की पूरी टीम को साधुवाद दिया। अणुविभा, अणुव्रत समिति परिवार की सराहनीय उपस्थिति रही।

कन्या चेतना कार्यशाला

नोखा

स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित कन्या चेतना कार्यशाला में 'शासन गौरव' साध्वी राजीमतीजी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा- 'कन्याएं संस्कार सम्पन्न होगी तो भविष्य में अच्छी गृहणी बनकर संस्कृति सम्पन्न परिवार, समाज, राष्ट्र की उन्नति में सहायक सिद्ध होगी। सद्संस्कारी कन्या पीहर एवं ससुराल दोनों परिवारों को रोशन करेगी, इसीलिए वह लक्ष्मी, दुर्गा व सरस्वती स्वरूपा बनती है।' मुख्य वक्ता डॉ॰ मधुकर जैन ने व्यवहारिक प्रशिक्षण देते हुए खरगोश-कुछऐ की मार्मिक कथा द्वारा निरन्तर सत्साहित्य का अध्ययन करने, अच्छी संगत करने और स्वस्थ तन, स्वस्थ मन व स्वस्थ चिन्तन की बात बताई। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की अध्यक्ष आरती संचेती ने कन्याओं के सर्वांगीण विकास में माता-पिता एवं गुरु की अहम् भूमिका बताई। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। हेमा फलोदिया ने अपने विचार रखे।

तेरापंथी सभा मंत्री लाभचंद छाजेड़, उपाध्यक्ष इन्दरचन्द बैद, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा सुमन मरोठी, कन्यामंडल संयोजिका दीप्ति संखलेचा ने अपनी अभिव्यक्तियां प्रस्तुत की। तेरापंथी सभा एवं तेरापंथ महिला मंडल द्वारा डॉ॰ मधुकर जैन एवं आरती संचेती का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

सम्यक् दर्शन कार्यशाला

पर्वत पाटिया

साध्वी हिमश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा सम्यक् दर्शन कार्यशाला आयोजित हुई। उपस्थित श्रद्धालु श्रावक समुदाय को संबोधित करते हुए साध्वी हिमश्रीजी ने कहा- प्रत्येक व्यक्ति आध्यात्मिकता के क्षेत्र में विकास कर सकता है। शिखर पर पहुंच सकता है। प्रत्येक आत्मा परमात्मा बन सकती है। परमात्मा बनने का मार्ग सरल नहीं है। इस सुदीर्घ सफर का यात्री बनने हेतु सर्वप्रथम सम्यक दर्शन की प्राप्ति करना जरूरी है। सम्यकदर्शी बने बिना भव भवांतर के संचित कर्मों का नाश करना संभव नहीं है। सम्यक दर्शन का सीधा-सादा अर्थ है- सकारात्मक दृष्टिकोण। सम्यक दर्शन का मतलब है सत्य का स्वीकरण। कौनसा व्यक्ति सम्यकदर्शी है और कौनसा व्यक्ति नहीं है, यह हम निश्चित रूप से तो नहीं कह सकते लेकिन जो देव, गुरु और केवली भाषित धर्म पर, तीर्थंकरों की वाणी पर अटूट श्रद्धा रखता है, उसे सम्यकदर्शी कहा जा सकता है। जो धर्म को धर्म, मार्ग को मार्ग, जीव को जीव, साधु को साधु और मुक्त को मुक्त मानता है, वह सम्यकदर्शी हो सकता है। जो धर्म को अधर्म, मार्ग को कुमार्ग और असाधु को साधु मानता है, वह सम्यकदर्शी नहीं हो सकता। साध्वी मुक्तियशाजी ने पच्चीस बोल प्रतियोगिता का परिणाम घोषित किया। साध्वी चैतन्ययशाजी ने प्राग उद्बोधन दिया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
* श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

अपने संस्कार : अपनी निधि जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

सूरत

गंगाशहर निवासी सूरत प्रवासी रिषभ-प्रिया बोथरा के नवजात पुत्र रत्न का नामकरण संस्कार संतोष बैद के निवास पर जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में जैन संस्कारक विनीत कुमार बोथरा, सहयोगी के रूप में संदीप रांका ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोचार सहित जैन संस्कार विधि से नामकरण का कार्यक्रम संपन्न करवाया। इस अवसर पर धार्मिक गीतिकाओं का संगान भी समवेत स्वरों में किया गया। विनीत कुमार बोथरा ने नामकरण पत्रक का वाचन किया। बोथरा एवं बैद परिवार को शुभकामनाएं प्रेषित की गई। कार्यक्रम में किशन बैद, धीरज बैद, सन्तोष बैद, पारस पारख, महेन्द्र नाहटा आदि की उपस्थिति रही।

गुवाहाटी

उदासर निवासी सुनील-दीपा रामपुरिया के सुपुत्र का नामकरण संस्कार तेयुप गुवाहाटी द्वारा जैन संस्कार विधि से सम्पन्न करवाया गया। संस्कारक बाबूलाल सुराणा, अशोक मालू एवं अशोक बोरड़ ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संस्कार का कार्य सानन्द संपादित करवाया। इस अवसर पर तेयुप की ओर से मंत्री संदीप कुमार भादानी एवं कोषाध्यक्ष मुकेश बरडिया ने शुभकामनाएं प्रेषित की।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारम्भ

विजयनगर, बैंगलोर

लादुवास निवासी बैंगलोर प्रवासी दिलीप बोहरा के नूतन प्रतिष्ठान 'मेगा ब्युल्ड पॉइंट' के शुभारम्भ का जैन संस्कार विधि से करवाया गया। विजयनगर से विकास बांठिया, पवन बैद एवं धीरज भादानी ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया। तेयुप विजयनगर अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने भी बोहरा परिवार को नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ की शुभकामना संप्रेषित की। बोहरा परिवार की ओर से पुखराज श्रीमाल एवं जयंतीलाल बोहरा ने परिषद एवं संस्कारको के प्रति आभार ज्ञापन किया एवं जैन संस्कार विधि की सराहना की।

नूतन गृह-प्रवेश

विजयनगर, बैंगलोर

चिताम्बा निवासी बैंगलोर प्रवासी दिलीप मांडोत के नूतन गृहप्रवेश जैन संस्कार विधि से करवाया गया। परिषद से विकास बांठिया, संपत चावत एवं धीरज भादानी ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया। मांडोत परिवार ने तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर का आभार व्यक्त किया तथा अन्य मांगलिक कार्य भी जैन संस्कार विधि से करवाने की भावना व्यक्त की।

पूर्वांचल-कोलकाता

चूरू निवासी पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी प्रमोद पारख के नूतन गृह प्रवेश के मंगल कार्यक्रम को जैन संस्कार विधि से सम्पन्न करवाया गया। उपासक एवं संस्कारक सुरेन्द्र सेठिया ने सम्पूर्ण विधि विधान से मंगल-स्तोत्रों के उच्चारण के साथ परिवारजनों की उपस्थिति मे मंगल कार्यक्रम संपादित करवाया। जैन संस्कार विधि द्वारा आयोजित कार्यक्रम से पूरा पारख परिवार अति प्रसन्न था और परिषद को इस आयोजन के लिए साधुवाद प्रेषित किया। तेयुप पूर्वांचल कोलकाता की ओर से मंगलमय भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित की गई।

अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम व्यक्ति को गलत कार्यों से बचने की प्रेरणा देते हैं।

-आचार्यश्री महाश्रमण

'शासनमाता' साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के समाधि स्थल 'वात्सल्य पीठ' का शिलान्यास

■ उत्कृष्ट, कुशल प्रशासक थी साध्वीप्रमुखा कनप्रभाजी ■ साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी वात्सल्य की प्रतिमूर्ति

दिल्ली

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के समाधि स्थल का नामकरण 'वात्सल्य पीठ' बख्साया था। वात्सल्य पीठ के शिलान्यास का कार्यक्रम दो चरणों में आयोजित हुआ। पहले चरण में साध्वी डॉ० कुन्दनरेखाजी के सान्निध्य में जप का कार्यक्रम समाधि स्थल पर हुआ। तत्पश्चात जैन संस्कारकों द्वारा मंत्रोच्चारण किया गया। उसके पश्चात राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक आदरणीय मोहन भागवतजी द्वारा शिलान्यास किया गया।

कार्यक्रम का द्वितीय चरण तेरापंथ भवन परिसर स्थित 'महाप्रज्ञ सभागार' में साध्वी डॉ० कुन्दनरेखाजी के सान्निध्य में हुआ। सरसंघचालक मोहन भागवतजी ने साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की दिवंगत आत्मा को श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थी। उनके स्मरण मात्र से वात्सल्य की अनुभूति होती है। उसी अनुरूप यह 'वात्सल्य पीठ' सभी को प्रेरणा देता रहेगा। उन्होंने कहा कि साध्वी प्रमुखाश्रीजी को आचार्यश्री तुलसी के समय से अभी तक का लम्बा अनुभव था। वो उत्कृष्ट, कुशल प्रशासक थी। उनमें ज्ञान की समृद्धि के साथ ही कार्य को मूर्त रूप देने की अनुपम कला थी। उनका स्मरण हम प्रतिदिन करते रहें तथा उनके गुणों को जीवन में उतारने का प्रयास करें। मैं स्वयं भी सामर्थ्यनुसार प्रयत्न करूंगा।

डॉ० साध्वी कुन्दनरेखाजी ने फरमाया कि उनका स्मरण मां की ममता, वात्सल्य की स्मृति कराता है। उनका हर पल मंगल था। वो गुरु की विनीत शिष्या थी। उन्होंने विनम्रभाव से इतना पाया कि महासागर बन गयी। पचास वर्षों के लम्बेकाल में तीन-तीन गुरुओं का वरदहस्त पाया। उन्होंने संघ में सैंकड़ों साध्वियों को तरासकर तथा प्रतिबोध देकर तैयार किया। साध्वीश्रीजी ने आगे फरमाया कि जैन तेरापंथ धर्मसंघ और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में अनुशासन की दृष्टि से विशेष समानता है। दोनों में ही अनुशासन प्रधान है। आज इस शिलान्यास के कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवतजी पधारे हैं। वो स्वयं अनुशासन के पुरोधा हैं।

राज्यसभा सांसद लहरसिंह सिरोया ने कहा कि मुझे समय-समय पर जैन तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यप्रवर के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस धर्मसंघ के आचार्यों ने जैन दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने का भागीरथी कार्य किया है। उन्होंने शासनमाता को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि 'वात्सल्य पीठ' जो बनने जा रहा है, वो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा। उन्होंने कहा कि यह दिल्लीवासियों का सौभाग्य है कि उन्हें ऐसा अवसर प्राप्त हो रहा है।

विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मुझे शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने शासनमाता को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर कल्याण परिषद् के संयोजक के. सी. जैन, संस्था शिरोमणि महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, प्रधान न्यासी सुरेश गोयल, महासभा महामंत्री विनोद बैद, भगवान महावीर मेमोरियल के अध्यक्ष एवं दिल्ली धर्मसंघ के वरिष्ठ सुश्रावक के. एल. जैन, जैन विश्व भारती एवं शासनमाता के संसारपक्षीय बैद परिवार के सदस्य प्रमोद बैद, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल अध्यक्षा नीलम सेठिया, अणुव्रत विश्व भारती संगठन मंत्री कुसुम लूणिया, जय तुलसी फाउंडेशन के बजरंग सेठिया, दिल्ली तेयुप अध्यक्ष विकास चौरड़िया, दिल्ली तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा मंजू जैन, टीटीएफ के राजेश जैन एवं पुखराज सेठिया ने अभिव्यक्ति दी तथा श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली तेरापंथी सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया ने स्वागत भाषण किया। 'वात्सल्य पीठ' के समन्वयक लक्ष्मीपत बोथरा ने 'वात्सल्य पीठ' के आगामी निर्माण संबंधित जानकारी दी। दिल्ली तेरापंथी सभा के सदस्यों द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा, दिल्ली के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने एवं आभार ज्ञापन इस कार्यक्रम के संयोजक व तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष प्रदीप संचेती ने किया।

इस कार्यक्रम में केन्द्रीय संस्थाओं, स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण तथा गणमान्य व्यक्तियों सहित श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति थी।

तेममं द्वारा वंश वृक्ष प्रतियोगिता का आयोजन

बोरावड

साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन एवं तेरापंथ महिला मंडल, बोरावड़ के तत्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा 'आओ बनाए परिवार का वंश वृक्ष प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से किया गया। प्रतियोगिता में दस कन्याओं ने भाग लिया, जिन्होंने अपने-अपने परिवार की चार पीढियों का वंश वृक्ष बनाया। तेरापंथी सभा संरक्षक पृथ्वीराज गेलड़ा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा हर्षा चोरड़िया एवं मेघा देशपांडे ने निर्णायक की भूमिका निभाई। महिला मंडल उपाध्यक्षा प्रवीणा बोथरा एवं कन्या मंडल की सहसंयोजिका रुचि मेहता ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। साध्वी प्रांजलप्रभाजी ने अपने उद्बोधन में फरमाया-'कैसे बच्चे अपने परिवार से अच्छी बाते सीख सकते हैं और अपने जीवन में उन्हें उतारकर जीवन को अच्छा बना सकते हैं। सभी कन्याएं प्रतियोगिताओं के माध्यम से ज्ञान का विकास करती रहें। कन्या मंडल जीवन में आध्यात्मिकता को आगे बढती रहें, यही मंगलकामना।'

कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल संयोजिका प्रज्ञा लूणिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका निभा रही मेधा देशपांडे ने निर्णय की घोषणा करते हुए कहा कि आज इस प्रकार की प्रतियोगिता को देखकर आत्मिक तोष की अनुभूति हो रही है। महिला मंडल परिवार के बारे में जानने का यह प्रयास सराहनीय है। जिस प्रकार वृक्ष सदियों तक फल देता है उसी प्रकार परिवार भी सहयोग से फलता-फूलता है। प्रतियोगिता का लक्ष्य कला को निखारना होता है। सबने अच्छा प्रयास किया है। प्रतियोगिता में प्रियंका गेलड़ा ने प्रथम, मुस्कान लुनिया ने द्वितीय व खुशी मेहता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के पश्चात सभी के द्वारा बनाये गये वंश वृक्ष की प्रदर्शनी लगायी गयी। सभी दर्शकों ने कन्या मंडल की कलाकृतियों को सराहा।

विशेष रचना...

३०वें विकास महोत्सव पर

:: डॉ. साध्वी परमयशा ::

युगप्रधान ने युगधारा को दिए नए अवदान
प्रभु को शीष झुकाएं, नाव को पार लगाएं।।

कुंकुम के चरणों से खटेड़ कुल में आएं
राजरूपजी दादाजी लाड खूब लडाएं
झूमर वदना नंदन तुलसी-चंदेरी सम्मान।।

अणुव्रत नैतिकता की अलख जगाएं
प्रेक्षा की छांह तले सपने सजाएं
जीवन का विज्ञान सुनहरा-शिक्षा का अभियान।।

जैन विश्व भारती मुलकों में छाएं
समण श्रेणी देश विदेशों पहचान बनाएं
पा० शि० संस्था की फुलवारी-अमल धवल अरमान।।

आगम के संपादन से कीर्तिमान रचाया
साहित्य अनुशीलन से सूरज उगाया
प्रचन कौशल-अद्भुत अविचल-उतरे पुण्य निधान।।

जब तक नभ में रवि शशि गौरव गाएं
ऊर्जा पुरूष का हम सब ध्यान लगाएं
विकास-महोत्सव की बेला में-'परमयशा' संगान।।

(लय : स्वर्ग से सुंदर)

तप अभिनंदन समारोह के विभिन्न आयोजन

राजलदेसर

शासनश्री साध्वी मानकुमारीजी के पावन सान्निध्य में २१ दिवसीय तप करने वाले तपस्वी एवं स्थानीय तेरापंथ किशोर मंडल के संयोजक १६ वर्षीय पीयूष श्रीमाल का तप अभिनंदन समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया गया। साध्वी स्नेहप्रभाजी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। धर्म सभा को संबोधित करते हुए शासनश्री साध्वी मानकुमारीजी ने कहा - 'जैन धर्म की संस्कृति तप और त्याग की संस्कृति है। व्यक्ति अपने पुरुषार्थ के बल पर संयम व त्याग में पराक्रम करता है। तप के द्वारा व्यक्ति अपने कर्मों का क्षय कर आत्मा को निर्मल बनाता है। तेरापंथ धर्मसंघ में अनेक तपस्वी साधु-साध्वियां हुए हैं, जिन्होंने लंबी-लंबी तपस्या कर संघ की नींव को सुदृढ़ किया है। बचपन की उम्र में आहार संयम व तप करना महत्त्वपूर्ण है। पीयूष ने २१ दिन की तपस्या कर दृढ़ मनोबल का परिचय दिया है। अभी तो इसने उम्र के १६ पड़ाव ही पार किए हैं। अपनी उम्र से भी अधिक तपस्या कर इसने बड़े साहस का काम किया है। गुरु दृष्टि प्राप्त दृढ़ शक्ति वाला व्यक्ति ही तपस्या कर सकता है। पीयूष आगे भी इसी तरह तप कर अपनी आत्मा को निर्मल बनाए, यही मंगलकामना है।'

साध्वीवृंद ने सामूहिक रूप से तपस्या के भावों से ओतः प्रोत स्वरचित गीतिका का संगान कर तप की अनुमोदना की। इस अवसर पर राजस्थान के वन एवं पर्यावरण तथा देव स्थान विभाग के पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवा ने अपने ओजस्वी भावों में अभिव्यक्ति दी एवं भिक्षु भजन मंडली के साथ मिलकर सुमधुर गीतिका का संगान कर तपस्वी का अभिनंदन किया। समारोह में साध्वी कीर्तिरेखाजी, तेयुप अध्यक्ष एवं तपस्वी भाई के पारिवारिक सदस्य मुकेश श्रीमाल, टीना कोठारी, तेरापंथी सभा अध्यक्ष बिमलसिंह दुधेड़िया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा सविता बच्छावत, पूर्व अध्यक्षा प्रेम विनायकिया, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका मोनिका बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष भुवनेश्वर शर्मा, युवा विकास समिति अध्यक्ष मदन दाधीच, ममता कुंडलिया एवं अर्जुन विनायकिया ने तपस्वी के अनुमोदन में अपने भाव व्यक्त किये। तेरापंथ महिला मंडल तथा कन्या मंडल द्वारा गीत व वक्तव्य के माध्यम से तप अनुमोदन किया गया।

सभी संस्थाओं की ओर से तपस्वी पीयूष श्रीमाल का अभिनन्दन पत्र, मोमेंटो एवं साहित्य से सम्मान किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथी श्रावक-श्राविकाओं के साथ-साथ जैनेतर समाज के श्रद्धालुओं की भी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी इंदुयशाजी ने किया। तपस्वी पीयूष ने साध्वीश्रीजी से २१वें दिन के तप का प्रत्याख्यान किया।

नोखा

महावीर चौक स्थित तेरापंथ भवन में मोनिका राजेश मालू एवं सरला किशोर पारख के मासखमण की तपस्या का तप अभिनन्दन कार्यक्रम शासन गौरव साध्वी राजीमतीजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों द्वारा मंगलाचरण से की गई। तत्पश्चात मालू परिवार से बहू-बेटियों ने तप अभिनंदन में गीतिका एवं खुशबु नंदनी मालू ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। पारख परिवार से सामूहिक गीत एवं ऋषिका, विश्वास, मनीष सिंघी, पूर्व प्रधान कन्हैयालाल सियाग द्वारा तप का अभिनन्दन और अनुमोदन किया गया। देशनोक के संचेती परिवार ने भी अपनी बेटी के मासखमण पर पारिवारिक गीत से भाव व्यक्त किये।

शासन गौरव साध्वी राजीमतीजी ने अपने पावन पाथेय में तप को मंगलकारी और अनन्त कर्मो का क्षय करने का साधन बताया। श्रम और तप दोनों को चिकित्सा बताते हुए उनोदरी को भी तप बताया। तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, कन्या मण्डल आदि ने भी गीतिकाओं का संगान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन गजेन्द्र पारख ने किया। सभी संस्थाओं द्वारा तपस्वियों का तपाभिनंदन पत्र, साहित्य आदि से सम्मान किया गया।

शाहदरा, दिल्ली

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की अनुकम्पा से एवं उनकी सुशिष्या साध्वी अणिमाश्रीजी की प्रेरणा से गंगाशहर निवासी -रामनगर, दिल्ली प्रवासी शिल्पा सेठिया धर्मपत्नी नवरत्नमल सेठिया के १५ की तपस्या के अनुमोदन का कार्यक्रम तेरापंथी सभा, शाहदरा, दिल्ली द्वारा किया गया। साध्वी अणिमाश्रीजी एवं सहवर्ती साध्वियों ने मधुर गीतिका के माध्यम से तपस्विनी बहिन की अनुमोदना करते हुए उपस्थित श्रावक श्राविकाओं को तप करने की प्रेरणा प्रदान करवाई। तेरापंथी सभा मंत्री सुरेश सेठिया ने वक्तव्य के माध्यम से व तपस्विनी बहिन की पारिवारिक बहिनों ने गीतिका के माध्यम से तपस्विनी बहिन की अनुमोदना की। साध्वीश्रीजी ने तपस्विनी बहिन को १५ की तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया। शाहदरा तेरापंथी सभा द्वारा तपस्विनी बहिन का साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया।

कृष्णा नगर, दिल्ली

महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की अनुकम्पा से एवं उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी की पावन प्रेरणा से तेरापंथ भवन, कृष्णानगर में समता कोचर धर्मपत्नी संतोष कोचर का मासखमण तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर मुनिश्री ने फरमाया कि सुश्राविका समता कोचर ने नाम के अनुरूप समता से तप साधना की है। इस अवसर पर मुनिश्री ने स्वरचित गीतिका का संगान किया। पारिवारिकजनों ने तप गीतिका का संगान कर तपस्वी बहन का बहुमान किया। साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के पावन संदेश का वाचन तेरापंथी सभा के पूर्व मंत्री कमल बोथरा ने किया। ६ की तपस्या में गतिमान तपस्वी बहिन कविता बैद, चंचला दुगड़, पूर्णिमा सेठिया एवं इन्दू देवी मालू द्वारा तपस्वी बहिन समता कोचर को संदेश पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में कल्पना दुगड़ एवं ईशा बैद के मासखमण तप के उपलक्ष्य में साउथ कोलकाता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमारजी कहा- 'धर्म ही दीपक है, जो अज्ञान रूपी अंधकार का नाश करता है। धर्म एक अमोघ संजीवनी है, जिसे धारण करने वाला व्यक्ति अलौकिक ऊर्जा, शक्ति, प्रकाश को प्राप्त होता है। धर्म दिशा दर्शक, पथ प्रदर्शक व आत्म प्रकाशक है। धर्म का एक प्रकार तप है। आहार का परिहार करना तप है। आहार के साथ-साथ आसक्ति, मूर्च्छा का त्याग करना कठिन है। तप को महातप कहा गया है। तपस्या अपने आप में सम्मान है। तपस्या करना एक प्रकार से निग्रह है। पांच इन्द्रियों में रसनेन्द्रिय पर विजय पाना कठिन है। तप अध्यात्म साधना का प्राण है। मानसिक शांति का एक मात्र प्राण है। तप से आत्मा का सौन्दर्य बढता है और पूर्वार्जित कर्मो का क्षय व तन-मन स्वस्थ रहता है। जैसे मंदिर की सफाई के बाद ही उसमें मूर्ति की प्रतिष्ठा होती है, वैसे ही तप करने से पापों की विशुद्ध के बाद आत्मा निर्मल होती है। जहां एक उपवास करना भी कठिन होता है, वहीं वे जीव भाग्यशाली हैं, जो मासखमण की तपस्या करके जिनशासन की प्रभावना करते हैं। कल्पना दुगड़ व ईशा बैद ने मासखमण कर साहस का परिचय दिया है। दोनों के प्रति आध्यात्मिक शुभकामना।' बाल मुनि कुणालकुमारजी ने सुमधुर तप गीत का संगान किया।

इस अवसर पर तप अनुमोदना में साउथ कोलकाता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा अध्यक्ष विनोद चोरड़िया ने साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन किया। सहमंत्री कमल कोचर एवं कार्यकारिणी सदस्य नवीन दुगड़ ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। कोषाध्यक्ष रतनलाल सेठिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा पद्मा कोचर, निर्मल भूतोड़िया, पूनम दुगड़, प्रकाश गिड़िया एवं गुलाब बैद ने विचार व्यक्त किये। मासखमण तपस्विनी कल्पना दुगड़ व ईशा बैद ने अपने अनुभव प्रस्तुत करते हुए भाव व्यक्त किये। दुगड़ परिवार से तप अनुमोदना गीत का संगान अंजू भूतोड़िया, मधु दुगड़, चन्दा बोरड़, रंजना चौपड़ा, अर्चना चौरड़िया ने व बैद परिवार की ओर से सीमा गिड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया। तेरापंथी सभा की ओर से तपस्वियों को मोमेन्टों, अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

शाहदरा,दिल्ली

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में ओसवाल भवन में तेरापंथी सभा, शाहदरा के तत्वावधान में मासखमण तप साधिका सुशीला सुराणा के मासखमण एवं तपसण की १६ वर्षीय दोहिती धृति दुगड़ के पखवाड़े तप के उपलक्ष में तपोभिनंदन का भव्य कार्यक्रम समायोजित हुआ। तप-शोभा यात्रा के द्वारा तपस्विनी बहनों ने भवन में प्रवेश किया। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा-'ऐसा लगता है, शाहदरा में तप की दीवाली आई है। घर-घर में तपस्या के दीप जल रहे हैं। आंगन-आंगन में तप के फूल खिल रहे हैं। उन तप-फूलों की सुवास से पूरा दिल्ली सुवासित हो रहा है। भगवान महावीर ने आत्म-शोधन के लिए तपस्या का मार्ग बताया है। तप रूपी पावक में तपकर आत्मा कुंदन की तरह निखर जाती है। बहन सुशीला सुराणा ने मासखमण (३१ तप) एवं धृति दुगड़ ने पखवाड़ा तप कर अपने आत्मतेज को तेजोदीप्त किया है। नानी-दोहिती का यह जोड़ा अभिनन्दनीय है, स्तुत्य है। नानी-दोहिती के जोड़े विरले होते हैं, जो तप के क्षेत्र में साथ-साथ गतिमान होते हैं। नानी-दोहिती का यह जोड़ा तप के क्षेत्र में नए कीर्तिमान बनाए। तपस्वी के मनोबल, संकल्पबल के साथ परिवार के सहयोग से आज भावना फलित हुई है। तप की भावना निरन्तर बढ़ती रहे मंगलकामना।'

साध्वीवृंद ने तप की अनुमोदना में भावपूर्ण गीत का संगान किया। साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन विनय सुराणा ने किया। तेरापंथी सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, ओसवाल समाज के महामंत्री राजेन्द्र सिंघी, पूर्वी दिल्ली तेरांपथ महिला मंडल अध्यक्षा सरोज सिपानी, तेयुप दिल्ली से पवन पारख एवं तेरापंथी सभा, गाजियाबाद के सहमंत्री महेन्द्र घीया ने विचार रखे। मेघना व हर्षिता तथा पारिवारिक बहिनों ने गीत एवं अणुविभा से डॉ० कुसुम लुणिया ने अपने भावों की सुंदर प्रस्तुति दी।

तेरापंथी सभा, शाहदरा की ओर से गुरुदेव की तस्वीर, मोमेंटो, साहित्य आदि से तपस्विनी बहिनों का सम्मान किया गया। अणुव्रत समिति व तेममं पूर्वी दिल्ली द्वारा तपस्विनी बहिनों का साहित्य से सम्मान किया गया। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

बैंगलोर

जैन संस्कारों को घर-घर तक पहुंचाने के उद्देश्य के साथ तेयुप बैंगलोर अभातेयुप के निर्देशन में जैन संस्कार विधि के अलग-अलग कार्य संपादित कर रही है। तेयुप बैंगलोर द्वारा तपस्विनी उगमबाई हिरण धर्मपत्नी रतनलाल हिरण के मासखमण (३१ दिन) की तपस्या का तप संपूर्ति अनुष्ठान उनके निवास स्थान पर आयोजित किया गया। जैन संस्कार विधि से निर्दिष्ट मंत्रोच्चार से मंगलभावना पत्रक स्थापित करवाकर संस्कारक अमित भंडारी एवं सहयोगी भरत रायसोनी ने तप संपूर्ति अनुष्ठान की प्रक्रिया संपादित की। तेयुप अध्यक्ष रजत बैद ने मंगलकामनाएं देते हुए उपस्थित परिजनों को जैन संस्कार विधि के बारे में बताया और इसे अपनाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर परिषद् के कार्यसमिति सदस्य अंकित छाजेड़ एवं पारिवारिक जन उपस्थित थे। तपस्विनी बहन एवं परिजनों ने संकल्प एवं त्याग-प्रत्याख्यान किए।

ध्यान व जप करना साधना है तो चिंतन है हर क्रिया में समत्व का अभ्यास रहे तो चलना, बोलना, लिखना आदि भी साधना हो सकती है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

:: आचार्य तुलसी ::

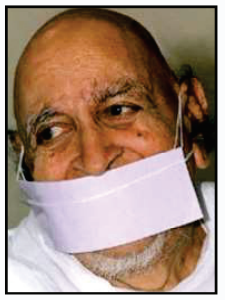

शरीर-प्रेक्षा

साधना की दृष्टि से शरीर का बहुत महत्त्व है। यह आत्मा का केन्द्र है। इसी के माध्यम से चैतन्य अभिव्यक्त होता है। चैतन्य पर आए हुए आवरण को दूर करने के लिए इसे सशक्त माध्यम बनाया जा सकता है। इसीलिए गौतम ने केशी से कहा था- 'यह शरीर नौका है। जीव नाविक है और संसार समुद्र है।'

इस नौका के द्वारा संसार का पार पाया जा सकता है। शरीर को समग्र दृष्टि से देखने की साधना-पद्धति बहुत महत्वपूर्ण है। शरीर के तीन भाग हैं :

1- अधोभाग-आंख का गढ्ढा, गले का गढ्ढा, मुख के बीच का भाग।

2-ऊर्ध्वभाग- घुटना, छाती, ललाट, उभरे हुए भाग

३- तिर्यंग् भाग- समतल भाग।

शरीर के अधोभाग में स्रोत है, ऊर्ध्वभाग में स्रोत हैं और मध्य भाग में स्रोत-नाभि है।

साधक चक्षु को संयत कर शरीर की विपश्यना करे। उसकी विपश्यना करने वाला उसके अधोभाग को जान लेता है, उसके ऊर्ध्व भाग को जान लेता है और उसके मध्य भाग को जान लेता है।

जो साधक वर्तमान क्षण में शरीर में घटित होने वाली सुख-दुःख की वेदना को देखता है, वर्तमान क्षण का अन्वेषण करता है, वह अप्रमत्त हो जाता है।

शरीर-दर्शन की यह प्रक्रिया अन्तर्मुख होने की प्रक्रिया है। सामान्यतः बाहर की ओर प्रवाहित होने वाली चैतन्य की धारा को अन्तर की ओर प्रवाहित करने का प्रथम साधन स्थूल शरीर है। इस स्थूल शरीर के भीतर तैजस और कर्म- ये दो सूक्ष्म शरीर हैं। उनके भीतर आत्मा है। स्थूल शरीर की क्रियाओं और संवेदनों को देखने का अभ्यास करने वाला क्रमशः तेजस और कर्म शरीर को देखने लग जाता है। शरीर-दर्शन का दृढ़ अभ्यास और मन के सुशिक्षित होने पर शरीर में प्रवाहित होने वाली चैतन्य की धारा का साक्षात्कार होने लग जाता है। जैसे-जैसे साधक स्थूल से सूक्ष्म दर्शन की ओर आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे उसका अप्रमाद बढ़ता जाता है ।

स्थूल शरीर के वर्तमान क्षण को देखने वाला जागरूक हो जाता है। कोई क्षण सुख-रूप होता है और कोई क्षण दुःख-रूप। क्षण को देखने वाला सुखात्मक क्षण के प्रति राग नहीं करता और दुःखात्मक क्षण के प्रति द्वेष नहीं करता। वह केवल देखता और जानता है।

शरीर की प्रेक्षा करने वाला शरीर के भीतर से भीतर पहुंचकर शरीर- धातुओं को देखता है और झरते हुए विविध स्रोतों (अन्तरों) को भी देखता है।

देखने का प्रयोग बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। उसका महत्त्व तभी अनुभूत होता है, जब मन की स्थिरता, दृढ़ता और स्पष्टता से दृश्य को देखा जाए। शरीर के प्रकम्पनों को देखना, उसके भीतर प्रवेश कर भीतरी प्रकम्पनों को देखना, मन को बाहर से भीतर में ले जाने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया से मूर्च्छा टूटती है और सुप्त चैतन्य जागृत होता है। शरीर का जितना आयतन है, उतना ही आत्मा का आयतन है। जितना आत्मा का आयतन है, उतना ही चेतना का आयतन है। इसका तात्पर्य यह है कि शरीर के कण-कण में चैतन्य व्याप्त है। इसीलिए शरीर के प्रत्येक कण में संवेदन होता है। उस संवेदन से मनुष्य अपने स्वरूप को देखता है, अपने अस्तित्व को जानता है और अपने स्वभाव का अनुभव करता है। शरीर में होने वाले संवेदन को देखना चैतन्य को देखना है, उसके माध्यम से आत्मा को देखना है।

४- वर्तमान क्षण की प्रेक्षा

अतीत बीत जाता है, भविष्य अनागत होता है, जीवित क्षण वर्तमान होता है । भगवान् महावीर ने कहा- 'खणं जाणाहि पंडिए!' साधक तुम क्षण को जानो। अतीत के संस्कारों की स्मृति से भविष्य की कल्पनाएं और वासनाएं होती हैं। वर्तमान क्षण का अनुभव करने वाला स्मृति और कल्पना दोनों से बच जाता है। स्मृति और कल्पना राग-द्वेषयुक्त चित्त का निर्माण करती हैं। जो वर्तमान क्षण का अनुभव करता है, वह सहज ही राग-द्वेष से बच जाता है। यह राग-द्वेषशून्य वर्तमान क्षण ही संवर है। राग-द्वेषशून्य वर्तमान क्षण को जीने वाला अतीत में अर्जित कर्म-संस्कार के बंध का निरोध करता है। इस प्रकार वर्तमान क्षण में जीने वाला अतीत का प्रतिक्रमण, वर्तमान का संवरण और भविष्य का प्रत्याख्यान करता है।

तथागत अतीत और भविष्य के अर्थ को नहीं देखते। कल्पना को छोड़ने वाला महर्षि वर्तमान का अनुपश्यी हो, कर्म शरीर का शोषण कर उसे क्षीण कर डालता है।

भगवान् महावीर ने कहा- 'इस क्षण को जानो।' वर्तमान को जानना और वर्तमान में जीना ही भाव क्रिया है। यांत्रिक जीवन जीना, काल्पनिक जीवन जीना और कल्पना लोक में उड़ान भरना द्रव्य क्रिया है। वह चित्त का विक्षेप है और साधना का विघ्न है। भाव-क्रिया स्वयं साधना और स्वयं ध्यान है। हम चलते हैं और चलते समय हमारी चेतना जागृत रहती है, 'हम चल रहे हैं'- इसकी स्मृति रहती है- यह गति की भावक्रिया है। इसका सूत्र है कि साधक चलते समय पांचों इन्द्रियों के विषयों पर मन को केन्द्रित न करे। आंखों से कुछ दिखाई देता है, शब्द कानों से टकराते हैं, गंध के परमाणु आते हैं, ठंडी या गरम हवा शरीर को छूती है इन सबके साथ मन को न जोड़ें। रस की स्मृति न करें।

साधक चलते समय पांचों प्रकार का स्वाध्याय न करे- न पढ़ाए, न प्रश्न पूछे, न पुनरावर्तन करे, न अर्थ का अनुचिन्तन करे और न धर्म-चर्चा करे। मन को पूरा खाली रखे। साधक चलने वाला न रहे। किन्तु चलना बन जाए, तन्मूर्ति (मूर्तिमान् गति) हो जाए। उसका ध्यान चलने में ही केन्द्रित रहे, चेतना गति का पूरा साथ दे। यह गमनयोग है।

शरीर और वाणी की प्रत्येक क्रिया भाव-क्रिया बन जाती है, जब मन की क्रिया उसके साथ होती है, चेतना उसमें व्याप्त होती है।

भाव-क्रिया का सूत्र है- चित्त और मन क्रियमाण क्रियामय हो जाएं, इन्द्रियां उस क्रिया के प्रति समर्पित हों, हृदय उसकी भावना से भावित हो, मन उसके अतिरिक्त किसी अन्य विषय में न जाए, इस स्थिति में क्रिया भाव-क्रिया बनती है।

५- समता

आत्मा सूक्ष्म है, अतीन्द्रिय है, इसलिए वह परोक्ष है। चैतन्य उसका गुण है? उसका कार्य है- जानना और देखना। मन और शरीर के माध्यम से जानने और देखने की क्रिया होती है, इसलिए चैतन्य हमारे प्रत्यक्ष है। हम जानते हैं, देखते हैं, तब चैतन्य की क्रिया होती है। समग्र साधना का यही उद्देश्य है कि हम चैतन्य की स्वाभाविक क्रिया करें। केवल जानें और केवल देखें। इस स्थिति में अबाध आनन्द और अप्रतिहत शक्ति की धारा प्रवाहित रहती है, किन्तु मोह के द्वारा हमारा दर्शन निरुद्ध और ज्ञान आवृत रहता है, इसलिए हम केवल जानने और केवल देखने की स्थिति में नहीं रहते। हम प्रायः संवेदन की स्थिति में होते हैं। केवल जानना ज्ञान है। प्रियता और अप्रियता के भाव से जानना संवेदन है। हम पदार्थ को या तो प्रियता की दृष्टि से देखते हैं या अप्रियता की दृष्टि से। पदार्थ को केवल पदार्थ की दृष्टि से नहीं देख पाते। पदार्थ को केवल पदार्थ की दृष्टि से देखना ही समता है। वह केवल जानने और देखने से सिद्ध होती है। यह भी कहा जा सकता है कि केवल जानना और देखना ही समता है। जिसे समता प्राप्त होती है, वही ज्ञानी होता है। जो ज्ञानी होता है, उसी को समता प्राप्त होती है । ज्ञानी और साम्ययोगी- दोनों एकार्थक होते हैं।

हम इन्द्रियों के द्वारा देखते हैं, सुनते हैं, सूंघते हैं, चखते हैं, स्पर्श का अनुभव करते हैं तथा मन के द्वारा संकल्प-विकल्प या विचार करते हैं। प्रिय लगने वाले इन्द्रिय-विषय और मनोभाव राग उत्पन्न करते हैं और अप्रिय लगने वाले इन्द्रिय- विषय और मनोभाव द्वेष उत्पन्न करते हैं। जो प्रिय और अप्रिय लगने वाले विषयों और मनोभावों के प्रति सम होता है, उसके अन्तःकरण में वे प्रियता और अप्रियता का भाव उत्पन्न नहीं करते। प्रिय और अप्रिय तथा राग और द्वेष से परे वही हो सकता है, जो केवल ज्ञाता और द्रष्टा होता है। जो केवल ज्ञाता और द्रष्टा होता है, वही वीतराग होता है।

जैस-जैसे जानने और देखने का अभ्यास बढ़ता है, वैसे वैसे इंद्रियां-विषय और मनोभाव, प्रियता और अप्रियता उत्पन्न करना बंद कर देते हैं। फलतः राग और द्वेष, शांत और क्षीण होने लगते हैं। हमारी जानने और देखने की शक्ति अधिक प्रस्फुट हो जाती है। मन में कोई संकल्प उठे, उसे हम देखें। विचार का प्रवाह चल रहा हो, उसे हम देखें। इसे देखने का अर्थ होता है कि हम अपने अस्तित्व को संकल्प से भिन्न देख लेते हैं। संकल्प दृश्य है और 'मैं दृष्टा हूं'- इस भेद का स्पष्ट अनुभव हो जाता है। जब संकल्प के प्रवाह को देखते जाते हैं, तब धीमे-धीमे उसका प्रवाह रूक जाता है। संकल्प के प्रवाह को देखते-देखते हमारी दर्शन की शक्ति इतनी पटु हो जाती है कि हम दूसरे के संकल्प-प्रवाह को भी देखने लग जाते हैं।

हमारी आत्मा में अखंड चैतन्य है। उसमें जानने-देखने की असीम शक्ति है, फिर भी हम बहुत सीमित जानते-देखते हैं। इसका कारण है कि हमारा ज्ञान आवृत है, हमारा दर्शन आवृत है। इस आवरण की सृष्टि मोह ने की है। मोह को राग और द्वेष का पोषण मिल रहा है- प्रियता और अप्रियता मनोभाव से। यदि हम जानने देखने की शक्ति का विकास चाहते हैं तो हमें सबसे पहले प्रियता और अप्रियता के मनोभावों को छोड़ना होगा। उन्हें छोड़ने का जानने और देखने के सिवाय दूसरा कोई उपाय नहीं है। हमारे भीतर जानने और देखने की जो शक्ति बची हुई है, हमारा चैतन्य जितना अनावृत है, उसका हम उपयोग करें। केवल जानने और देखने का जितना अभ्यास कर सकें, करें। इससे प्रियता और अप्रियता के मनोभाव पर चोट होगी। उससे राग-द्वेष का चक्रव्यूह टूटेगा। उससे मोह की पकड़ कम होगी। फलस्वरूप ज्ञान और दर्शन का आवरण क्षीण होने लगेगा। इसलिए वीतराग-साधना का आधार जानना और देखना ही हो सकता है। इसीलिए इस सूत्र की रचना हुई है कि समूचे ज्ञान का सार सामयिक है - समता है।

६- संयम - संकल्प शक्ति का विकास

हमारे भीतर शक्ति का अनन्त कोष है। उस शक्ति का बहुत बड़ा भाग ढ़का हुआ है, प्रतिहत है। कुछ भाग सत्ता में है और कुछ भाग उपयोग में आ रहा है। हम अपनी शक्ति के प्रति जागरूक हों तो सत्ता में रही हुई शक्ति और प्रतिहत शक्ति को उपयोग की भूमिका तक ला सकते हैं। (क्रमशः)

संबोधि

:: आचार्य महाप्रज्ञ ::

बंध मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

यथार्थ वाक् के रूप जो में सत्य है, हमारा परिचय अधिकांश इसी से है। सत्यवादी हरिशचन्द्र की ख्याति का कारण भी यही है। युधिष्ठिर का रथ जो अधर में रहता था, उसका हेतु भी सत्य-वचन था। समग्र में इसकी आराधना भी उसी पूर्ण सत्य की प्राप्ति का निमित्त बनती है। तीर्थंकरों, आप्तपुरूषों, प्रामाणिक व्यक्तियों का 'यथावादी' एक विशिष्ट गुण होता है। महात्मा गांधी ने कहा- हंसी मजाक में भी असत्य-अयथार्थ भाषण नहीं करना चाहिए। निःसंदेह सत्य की साधना 'असिधारा' व्रत है। सत्य बोध में साधक को इन समस्त तथ्यों पर चिंतन करना चाहिए।

४३- सिंहं यथा क्षुद्रमृगाश्चरन्तः, चरन्ति दूरं परिश्ङ्कमानाः।।
समीक्ष्य धर्मं मतिमान् मनुष्यों, दूरेन पापं परिर्वयेच्च।।
जैसे चरते हुए छोटे पशु सिंह से डर कर दूर रहते हैं, इसी प्रकार मतिमान् पुरुष धर्म को समझकर दूर से ही पाप का वर्जन करे।

पाप का अर्थ है- अशुभ प्रवृत्ति। जिस प्रवृत्ति से आत्मा का हनन होता है, वह पाप है। पाप त्याज्य है। उसके स्वरूप को पहचानकर जो व्यक्ति उससे दूर हटता है, वह धर्म के निकट चला जाता है। जो व्यक्ति आत्म-धर्म समझकर पाप से बचते हैं, वे बहुत शीघ्र धर्म के क्षेत्र में प्रवेश पा जाते हैं और जो लज्जावश या भयवश पाप से बचते हैं, वे समय आने पर स्खलित हो जाते हैं और धर्म में प्रवेश सुलभता से नहीं पा सकते। जो दिन में या रात में, अकेले में या समुदाय में, सोते हुए या जागते हुए कभी पाप में प्रवृत्त नहीं होता, वह महान् और वही आत्मनिष्ठ हो सकता है।

४४- यदा यदा हि लोकेस्मिन्, ग्लानिधर्ममर्स्य जायते।
तदा तदा मनुष्याणां, ग्लानिं यात्यात्मनो बलम्।।
इस संसार में जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, तब-तब मनुष्यों का आत्मबल ग्लान-हीन हो जाता है।

आत्मबल के समक्ष भौतिकबल नगण्य है। भौतिक शक्ति संपन्न व्यक्ति कितना ही पराक्रमी हो, किंतु दूसरों से सदा भयभीत रहता है। जिस हिटलर के नाम से विश्व कांपता था, वह हिटलर अपने भीतर स्वयं कितना प्रकंपित था, यह आज स्पष्ट हो चुका है। हिटलर एक कमरे में सो नहीं सकता था। शादी भी मरने के कुछ समय पूर्व की थी। पत्नी पर विश्वास नहीं। निजी डॉक्टरों ने कहा कि वह अनेक बीमारियों से ग्रस्त था। बहुत बार बाहर जाने के लिए भी अपनी शक्ल का दूसरा नकली व्यक्ति भेजता था। प्रतिक्षण भयभीत था। क्या इसे वीरत्व कहा जा सकता है।

अस्तित्व की दिशा में जो व्यक्ति कदम उठाता है उसका आत्मबल क्रमशः वर्धमान रहता है। उसके पास चाहे शरीर-बल इतना न भी हो किन्तु आत्म-बल परिपूर्ण होता है। वह कांपता नहीं रहता। वह मृत्यु के भय से मुक्त हो जाता है। भय जीवनैषणा के कारण है। जब जीवननैषणा ही नहीं रहती तब भय किसका, आत्मबल की क्षीणता का कारण है- धर्म-अस्तित्व के सम्यग् अवबोध का अभाव। धर्म ने कभी मनुष्य को भीरु नहीं बनाया। सही धार्मिक व्यक्ति भीरु हो भी नहीं सकता। जहां जाने से लोग डरते थे वहां महावीर महाविषधर चंडकौशिक के निवासस्थल पर जाकर ध्यानस्थ खड़े हे जाते हैं। बुद्ध 'अंगुलिमाल' के सामने उपस्थित होते हैं। महावीर का श्रावक सुदर्शन 'अर्जुनमाली' को बिना किसी शस्त्रास्त्र के परास्त कर उसे महावीर के चरणों में उपस्थित कर देता है। धर्म से जिस आत्मशक्ति का जागरण होता है, वैसा जागरण और किसी से नहीं होता। धर्म के प्रति उदासीन होने का अर्थ है, स्वयं के प्रति उदासीन होना। धर्म की क्षीणता में आत्मशक्ति की क्षीणता अनिवार्य है।

अवबोध

:: मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ::

कर्म बोध

प्रश्न १८- संक्रमण किसे कहते हैं?

उत्तर : शुभाशुभ आवृत्ति से कर्म की उत्तर आकृतियों का अपनी सजातीय प्रकृतियों में बदल जाना संक्रमण है। जैसे- मति ज्ञानावरणीय का श्रुत ज्ञानावरणीय व श्रुत ज्ञानावरणीय का मति ज्ञानावरणीय में, क्रोध का मान व मान का क्रोध के रूप में बदल जाना संक्रमण है। ज्ञानावरणीय का मोहनीय आदि कर्म प्रकृतियों में संक्रमण नहीं होता।

प्रश्न १९- क्या सभी कर्म प्रकृतियों का संक्रमण होता है?

उत्तर : आयुष्य कर्म का संक्रमण नहीं होता। दर्शन मोह और चारित्र मोह का परस्पर में संक्रमण नहीं होता। निधत्ति व निकाचित बंधी कर्म-प्रकृतियों का संक्रमण नहीं होता। शेष समस्त कर्म प्रकृतियों का परस्पर संक्रमण हो सकता है।

प्रश्न २०- सोपक्रमी व निरुपक्रमी आयुष्य किसे कहते हैं ?

उत्तर : जिस आयुष्य कर्म के उपक्रम-उपघात लगता है, वह सोपक्रमी आयुष्य होता है। जिसके कोई उपक्रम नहीं लगता, वह निरुपक्रमी आयुष्य है। जितने वर्ष का आयुष्य लेकर कोई जीव आता है उसमें एक समय का भी अंतर नहीं पड़ता, उसे निकाचित आयुष्य कहते हैं। (क्रमशः)

उपासना

(भाग-एक)

जैन जीवनशैली

प्रेक्षाध्यान

ध्यानासन

जिस आसन में आप लम्बे समय तक सुविधापूर्वक स्थिरता से बैठ सकें, उस ध्यानासन का चुनाव करें। जैसे- पद्मासन, अर्धपद्मासन, सुखासन या वज्रासन।

ध्यान-मुद्रा- आंखों को बिना दबाव दिए कोमलता से बन्द करें।

ब्रह्म- मुद्रा- दोनों हथेलियों को नाभि के नीचे स्थापित करें। बायीं हथेली नीचे और दायीं हथेली ऊपर रहे। (अथवा)

ज्ञान-मुद्रा- दोनों हाथों को घुटनों पर टिकाएं। अंगूठे और तर्जनी के अग्र भागों को मिलाएं। शेष तीनों अंगुलियां सीधी रहें।

अर्हं की ध्वनि- प्रारम्भ में अर्हं की ध्वनि नौ बार करें।

अर्हं-ध्वनि : विधि- पहले पूरा श्वास भरकर उसे धीरे-धीरे छोड़ते समय अर्हं का उच्चारण इस प्रकार करें- 'अ' कार का उच्चारण करते समय चित्त को नाभि पर केन्द्रित रखें, समय दो सेकंड।

'र्ह' का उच्चारण करते समय चित्त को आनन्द केन्द्र पर केन्द्रित करें, समय चार सेकंड। 'म्' की ध्वनि करते समय चित्त को विशुद्धि केन्द्र से ज्ञान केन्द्र तक ले जाएं, समय छह सेकंड। अंतिम नाद के समय चित्त को ज्ञान केन्द्र पर टिकाएं, समय दो सेकंड।

ध्येय-सूत्र

'संपिक्खए अप्पगमप्पएणं' का उच्चारण तीन बार करें।

आत्मा के द्वारा आत्मा को देखें। स्वयं स्वयं को देखें।

अपने-आपको देखने के लिए ही प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करें।

ध्यान का संकल्प

मैं चित्त-शुद्धि के लिए प्रेक्षाध्यान का प्रयोग कर रहा हूं। (तीन बार दोहराएं।)

ध्यान का पहला चरण-कायोत्सर्ग

1- शरीर को स्थिर, शिथिल और तनाव मुक्त करें। मेरुदंड और गर्दन को सीधा रखें, अकड़न न हो। मांसपेशियों को ढीला छोड़ें।

2- पांच मिनट तक काय-गुप्ति का अभ्यास करें। प्रतिमा की भांति शरीर को स्थिर रखें। हलन-चलन न करें। पांच मिनट तक पूरी स्थिरता।

कायोत्सर्ग के दो अर्थ हैं- शरीर का शिथिलीकरण और अपने प्रति जागरूकता। प्रत्येक अवयव के प्रति जागरूक बनें।

1- चित्त को पैर से सिर तक क्रमशः शरीर के प्रत्येक भाग पर ले जाएं।

2- पूरे भाग में चित्त की यात्रा करें।

3- शिथिलता का सुझाव दें और उसका अनुभव करें। प्रत्येक मांसपेशी और प्रत्येक स्नायु शिथिल हो जाए। पूरे शरीर की शिथिलता को साधें। गहरी एकाग्रता, पूरी जागरूकता। कायोत्सर्ग।

(जब नये साधकों को अभ्यास कराना हो तो दाहिने पांव के अंगूठे से क्रमशः सिर तक प्रत्येक भाग का नाम लेते हुए शिथिल कराएं।) जैसे-दाहिने पैर के अंगूठे पर चित्त को ले जाएं- पूरे भाग में चित्त को घुमाएं, चित्त की यात्रा करें। शिथिलता का सुझाव दें- शिथिल हो जाए। (तीन बार) शिथिल हो रहा है। (तीन बार) अनुभव करें, शिथिल हो गया है (तीन बार)- इसी प्रकार पूरे कायोत्सर्ग की विधि में दिए गए 'प्रत्येक अंगुली, पंजा, तलवा' आदि प्रत्येक भाग के नामों को क्रमशः बोल कर पूरे शरीर को शिथिल कराएं।

(दो मिनट बाद) अनुभव करें- शरीर का एक-एक भाग शिथिल होता जा रहा है। शरीर के प्रत्येक भाग में हलकेपन का अनुभव करें। पैर से सिर तक पूरा शरीर शिथिल हो गया है। पूरे ध्यानकाल तक कायोत्सर्ग की मुद्रा बनी रहे। शरीर को अधिक से अधिक स्थिर और निश्चल रखने का अभ्यास करें।

(कोष्ठक में दिए गए शब्द निर्देश देते समय बोलने की जरूरत नहीं है ।)

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18 सितम्बर-24 सितम्बर 2023

व्यक्ति का व्यवहार धर्मयुक्त होना चाहिए। उसे ऐसे पथ पर चलना चाहिए, जिस पर महापुरुष चले हैं।
-आचार्यश्री महाश्रमण

रक्तदान शिविर का आयोजन

हनुमंतनगर, बैंगलोर

अभातेयुप निर्देशित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अन्तर्गत तेयुप एचबीएसटी हनुमंतनगर द्वारा प्रेस्टीज साउथ रिड्ज अपार्टमेंट में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। 32 रक्तदाताओं ने रक्तदान कर मानवता के प्रति जागरूकता का परिचय दिया। तेयुप अध्यक्ष अंकुश बैद, उपाध्यक्ष विजय कटारिया, सहमंत्री सुमित चिंडालिया ने भी रक्तदान किया। अपॉलो हॉस्पिटल ब्लड बैंक, शेषाद्रीपुरम की टीम ने शिविर का सफल संचालन किया। अपार्टमेंट के मैनेजर का सम्मान किया गया। ब्लड बैंक द्वारा तेयुप को प्रोत्साहन पत्र दिया गया। इस अवसर पर तेयुप मंत्री राजीव हिरावत, ऋषभ सोलंकी की उपस्थिति रही।

जीएसटी और एमएसएमई नॉलेज सेमिनार का आयोजन

उधना

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, सूरत द्वारा व्यापारियों के लिये जीएसटी और एमएसएमइ नॉलेज सेमिनार का आयोजन तेरापंथ भवन, उधना मे किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनि उदितकुमारजी के द्वारा मंगल मंत्रोचार से हुई। स्वागत वक्तव्य टीपीएफ सूरत अध्यक्ष कैलाश झाबक द्वारा दिया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अखिल भारतीय व्यापारिक संस्था के मंत्री प्रवीण खण्डेलवाल का परिचय प्रतीक भोगर द्वारा दिया गया।

मुख्य वक्ता प्रवीण खण्डेलवाल द्वारा जीएसटी और एमएसएमई के बारे में व्यापारियों के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान की गयी। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री संजय गादिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन अखिल मारू द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में महासभा के सहमंत्री अनिल चंडालिया, अखिल भारतीय महिला मंडल की महामंत्री मधु देरासरिया, उधना सभा अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष सचिन चंडालिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा चंदा भोगर, टीपीएफ पूर्व अध्यक्ष राहुल राठौड़, टीपीएफ फेमिना अध्यक्षा भारती छाजेड़ आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में अच्छी संख्या में व्यापारियों ने लाभ लिया।

प्रतिक्रमण कार्यशाला

कानपुर

साध्वी संगीतश्रीजी के पावन सान्निध्य में प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के महामंत्रोचार से हुआ। तत्पश्चात तेरापंथी सभा के अध्यक्ष धनराज सुराणा, मंत्री संदीप जम्मड़ और पूनमचंद सुराणा ने सामूहिक रूप से मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा ने अपने वक्तव्य में कहा कि एकमात्र जैन धर्म में कृत कार्यों की आलोचना करने का प्रावधान है, जिसे प्रतिक्रमण कहा जाता है। अन्य धर्म से यह भिन्न बात है। साध्वी संगीतश्रीजी ने उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि प्रतिक्रमण आत्मा को शुद्ध करने का सफल मार्ग है। जिस प्रकार शरीर के घावों के लिए मरहम पट्टी करनी पड़ती है, उसी तरह भीतर के पापों को निकाल कर कायोत्सर्ग के माध्यम से शुद्ध किया जा सकता है। साध्वी शांतिप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में फरमाया कि जैन धर्म में प्रतिक्रमण एक कर्म है, जिसमें पूर्व कृत दोषों की मन, वचन और काया से आलोचना की जाती है अर्थात प्रतिक्रमण कार्यों का सिंहावलोकन है, जो भविष्य के सद्मार्ग को प्रशस्त बनाता है। प्रतिक्रमण कर्म निर्जरा का अपूर्व साधन है। साध्वी मुदिताश्रीजी ने अपने वक्तव्य में दिवसीय, पाक्षिक, चातुर्मासिक और संवत्सरी प्रतिक्रमण के महत्व के बारे में बताया तथा उपस्थित समाज को प्रतिक्रमण करने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वी कमलविभाजी ने बहुत ही सरल तरीके से प्रतिक्रमण के सभी आवश्यक के बारे में संपूर्ण जानकारी प्रदान की। तेरापंथी सभा की ओर से कार्यशाला में सम्मिलित सभी श्रावकों को 'श्रावक प्रतिक्रमण' पुस्तक भेंट की गई। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री संदीप जम्मड ने किया।

नव युवती परिचय कार्यशाला

रोहिणी, दिल्ली

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल 'स्वस्थ परिवार : स्वस्थ समाज' योजना के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल, दिल्ली उत्तर द्वारा शासनश्री साध्वी संघमित्राजी एवं शासनश्री साध्वी ललितप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, रोहिणी में नवयुवती परिचय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ पूनम सुराणा द्वारा मंगलाचरण से किया गया। तत्पश्चात नवयुवतियों का परिचय सत्र हुआ। अध्यक्ष मधु सेठिया द्वारा सभी बहनों का स्वागत किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की मुख्य न्यासी पुष्पा बैंगानी ने 'परंपरा बनाम आधुनिकता' पर वक्तव्य देते हुए कहा कि परिवार हमारा धरातल है, इससे जुड़े रहकर परंपरा का निर्वाह करते हुए हमें आधुनिक जीवन जीना चाहिए। उन्होंने युवतियों से प्रश्न भी किया कि आधुनिकता हमें क्यों पसंद है? शासनश्री साध्वी संघमित्राजी ने मंगल उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि अपनी संस्कृति से जुड़े रहने का प्रयत्न करना चाहिए। नया युग आ रहा है, नया बदलाव हो रहा है। महिला मंडल सहमंत्री प्रवीणा सिंघी ने रोचक धार्मिक प्रतियोगिता करवाई। मंच का संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री इंदिरा सुराणा ने किया।

रक्षा बंधन कार्यशाला के विभिन्न आयोजन

मैसूर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, मैसूर द्वारा रक्षाबंधन कार्यशाला का सफल आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। मुनि रश्मिकुमारजी एवं मुनि प्रियांशु- कुमारजी के द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात संस्कारक राजेश आच्छा, अशोक बुरड़, विक्रम पितलिया, लक्की श्रीश्रीमाल ने मंत्रोचार के साथ कार्यशाला का शुभारंभ किया। संस्कारको द्वारा रक्षा बंधन कार्यशाला जैन संस्कार विधि से क्यों और कैसे मनानी चाहिए, इसके बारे में जानकारी प्रदान की गई। अनेक भाई बहन के जोड़ों ने कार्यशाला में भाग लिया एवं उत्साह के साथ रक्षा बंधन का त्यौंहार मनाया।

मुनि रश्मिकुमारजी ने अपने प्रवचन में खंदक मुनि द्वारा अपनी बहन की आत्मा की रक्षा के लिए अनार्य देश में भगवान मुनि सुव्रत से आज्ञा लेकर पधारने और अनेक जीवों को धर्म मार्ग की प्राप्ति के प्रसंग को समझाया। कार्यशाला में तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, अणुव्रत समिति आदि संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित श्रावक-श्राविकाओं की भी उपस्थित रही।

ईरोड

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, ईरोड द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। उपासक संस्कारक हनुमानमल दूगड़ एवं संस्कारक राजेश बोथरा ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यशाला का शुभारंभ किया। तेयुप अध्यक्ष महेंद्र भंसाली ने सभी का स्वागत करते हुए जैन संस्कार विधि के बारे जानकारी दी। तेयुप सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया। उपासक हनुमानमल दूगड़ ने जैन संस्कार विधि के महत्व को समझाते हुए इस विधि से रक्षाबंधन मनाने की अवगति दी एवं जैन मंत्रों का महत्व समझाते हुए लोगस्स पाठ का अर्थ एवं मंगल भावना पत्रक का महत्व समझाया। बहिनों ने मंत्रोचार के साथ अपने भाइयों को राखी बांधी। इस कार्यशाला में तेयुप के सभी साथियों का सहयोग रहा। स्थानीय तेरापंथ समाज की भी अच्छी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री ऋषभ नखत ने किया।

अलीपुरद्वार

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद्, अलीपुरद्वार द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से किया गया। उपासक एवं संस्कारक धर्मचंद बाफना ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन मनाने के बारे में सरल शब्दों में समझाया। उन्होंने नमस्कार महामंत्र, भगवान महावीर स्तुति, लोगस्स का पाठ और मंगल पाठ के उच्चारण के साथ राखी बांधते समय उच्चारण किये जाने वाले मंत्रों के बारे में जानकारी दी। तेरापंथी सभा मंत्री मानिक बोथरा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा बसन्ती बैद, मंत्री स्नेहलता बोथरा सहित अनेक भाई-बहनों ने कार्यशाला में सहभागिता दर्ज कराई तथा कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया। तेयुप की ओर से अध्यक्ष सुमित भंसाली ने स्वागत एवं निवर्तमान अध्यक्ष शुभम भंसाली ने संस्कारको के प्रति आभार प्रकट किया तथा सभी को साधुवाद व धन्यवाद ज्ञापन कर कार्यक्रम को समापन किया।

सरदारपुरा

तेरापंथ युवक परिषद्, सरदारपुरा द्वारा मेघराज तातेड़ भवन में साध्वी कुंदनप्रभाजी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया। श्रीसंस्कारक मर्यादा कुमार कोठारी, कैलाश तातेड़, गौरव जैन ने साथ मिलकर रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि से जैन मंत्रोच्चार द्वारा कैसे मनाया जाये, उसकी जानकारी विधि सहित प्रदान की। इस अवसर पर आयोजन स्थल पर बहिनों ने भाईयों के विधिपूर्वक राखी बांधी।

इस अवसर पर साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में फरमाया- 'गृहस्थ जीवन में जैन संस्कार विधि श्रावक समाज को अनावश्यक हिंसा व बाहरी आडंबर से बचा सकती है। आचार्य तुलसी ने एक सुंदर विधि प्रस्तुत की और आज अभातेयुप अपनी शाखा परिषदों के माध्यम से इसे जन-साधारण तक पहुंचाने का कार्य कर रही है। यह महनीय उपक्रम जन-जन का उपक्रम बने, यही मंगलकामना।' इस अवसर पर संस्कारकगण ने उपस्थित श्रावक समाज को रक्षाबंधन जैन संस्कार विधि से मनाने का आह्वान किया।

धुबड़ी

तेरापंथ युवक परिषद्, धुबड़ी द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्रोच्चार द्वारा किया गया। तेयुप धुबड़ी के अध्यक्ष शीतल बुच्चा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संस्कारक आनन्द बरड़िया ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन मनाने की जानकारी प्रदान की। जैनत्व के संस्कारों के बीजारोपण हेतु तेयुप द्वारा यह कार्यशाला ज्ञानशाला परिवार के साथ आयोजित की गई। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों व प्रशिक्षकगण के साथ तेरापंथी सभा, तेयुप, तेममं, अणुव्रत समिति के सदस्यों ने कार्यशाला में सहभागिता दर्ज कराई। तेरापंथी सभा के पूर्व अध्यक्ष सुशील बैंगानी, अणुव्रत समिति की अध्यक्षा शांति देवी बरड़िया एवं तेरापंथ महिला मंडल की पूर्वाध्यक्षा सरिता बैद ने कार्यशाला की महत्ता समझाते हुए अपने अपने भाव व्यक्त किए। सभी बहनों ने अपने भाइयों के मस्तक पर तिलक लगाकर रक्षामोली बांधकर मंगलकामनाएं प्रेषित की।

ज्ञानशाला दिवस के विभिन्न आयोजन

ज्ञानशाला सद्संस्कारों के जागरण की अद्‌भुत शाला है

उधना

ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदितकुमारजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का भव्य रूप में आयोजन हुआ, जिसमें पांडेसरा, लिंबायत, सचिन और उधना की ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

मुनि उदितकुमारजी ने कहा- 'ज्ञानशाला सद्संस्कारों के जागरण की अद्‌भुत शाला है। गुरुदेव श्री तुलसी ने समाज को ज्ञानशाला के रूप में एक महान अवदान प्रदान किया है। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का ज्ञानशाला को विशेष आशीर्वाद प्राप्त है, तभी हम देखते हैं कि उनकी सन्निधि में प्रायः क्षेत्रों में ज्ञानशालाओं की प्रस्तुतियां होती रहती है। ६२ ज्ञानशालाओं से शुरू हुआ यह सफर आज ५५० से अधिक ज्ञानशालाओं तक पहुंच चुका है। पूरे देश में करीब २०००० ज्ञानार्थी लगभग ४००० प्रशिक्षिकों से ज्ञान व संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। अभिभावकों का यह पुनीत धर्म है कि वे अपने बच्चों को ज्ञानशाला भेजें, जिससे उनके शुभ भविष्य का निर्माण हो सके।'

मुनि अनंतकुमारजी ने भी अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। उपस्थित ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थियों द्वारा उत्साहपूर्वक गीत, नाटिका आदि की प्रस्तुति दी गई। गुजरात आंचलिक संयोजक प्रवीण मेड़तवाल, सहसंयोजक भावेश हिरण, विशाल पारिख ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। ज्ञानशाला उधना के संयोजक राजेश बाफना, उधना ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका उषा आंचलिया, क्षेत्रीय संयोजिका ज्योति मेडतवाल ने अपने प्रासंगिक विचार रखे। तेरापंथी सभा उधना के अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर ने सभी ज्ञानशालाओं का स्वागत कर अपनी मंगलकामना व्यक्त की। कार्यक्रम से पूर्व ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों एवं प्रशिक्षिकाओं द्वारा आकर्षक रैली निकाली गई जो उधना के विभिन्न मार्गो से गुजर कर तेरापंथ भवन पहुंची।

बच्चे विद्या-विनय-विवेक संपन्न बने

छोटी खाटू

साध्वी संघप्रभाजी के सान्निध्य में राष्ट्रीय ज्ञानशाला दिवस का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी प्राज्ञप्रभाजी ने महावीर स्तुति से किया। ज्ञानशाला के बच्चों को संबोधित करते हुए साध्वी संघप्रभाजी ने कहा- 'संस्कारों की फसल उगाने वाली यूरिया खाद है ज्ञानशाला। सफलताओं के महलों को बनाने वाली मजबूत बुनियाद है ज्ञानशाला। टूटे समाज बिखर के परिवारों की त्रासदी मां-बाप की भागम भाग जिंदगी के दौर में बच्चों को संस्कारित बनाने में सशक्त माध्यम है ज्ञानशाला। अपेक्षा है बच्चे विद्या-विनय-विवेक संपन्न बने।' ज्ञानशाला की बच्चियों द्वारा 'अर्हम्-अर्हम् की वंदना फले' गीत की रोचक प्रस्तुति दी गई। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा संस्कार सप्तक की मनोरम के साथ विविध प्रस्तुतियां दी गई।

ज्ञानशाला की संयोजिका मंजू फूलफगर, प्रशिक्षिका कुसुम बेताला, कपूरचंद बेताला एवं विकास सेठिया ने ज्ञानशाला के संदर्भ में अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी प्रांशुप्रभाजी ने किया। सभी ज्ञानार्थियों को बेताला एवं धारीवाल परिवार द्वारा पुरस्कृत किया गया। पत्रकार एवं व्यवस्थापक मुकेश सेन का भी सम्मान किया गया।

आरोहण कार्यशाला का आयोजन

उधना

ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक बहुश्रुत मुनि उदितकुमारजी के सान्निध्य में 'आरोहण २०२३' का आयोजन हुआ। इस सेमिनार में ३१५ किशोर व कन्याओं की सहभागिता रही।

मुनिश्री ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा-'प्रत्येक व्यक्ति आरोहण करे। व्यक्ति का ज्ञान, चारित्र, नैतिकता, धार्मिक क्रिया में आरोहण हो। वह गुणवान बने, इसके लिए सतत पुरुषार्थ भी करे। जीवन की प्राप्ति एक सामान्य घटना है पर उस जीवन में गुणों का आरोहण उसकी उपयोगिता है, तभी वह स्वयं के लिए, परिवार, समाज व देश के लिए उपयोगी बन सकता है। कोरी कल्पना से काम नहीं चलता, उसके साथ पुरुषार्थ का योग हो, वह भी लक्ष्य के अनुरूप हो, तभी सफलता की प्राप्ति संभव है। मुनि अनंतकुमारजी ने भी अपने प्रासंगिक विचार रखे।

सेमिनार के मुख्य प्रशिक्षक दिलीप सरावगी ने 'जैनिज्म एंड नेक्स्ट जेनरेशन विद स्किल डेवलपमेंट' विषय पर पीपीटी के माध्यम से प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण के बाद मैनेजमेंट गेम तथा 'फैमिली शेयरिंग चैलेंज एंड सलूशन' विषय पर ओपन सेशन का संचालन अरुण सेठिया ने किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ किशोर मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल आदि के कार्यकर्ताओं की पूरी टीम कार्यशाला की कुशल संयोजना में सक्रिय रही।

छोटे बच्चों का जीवन कोरे कागज के समान

सुनाम

साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का कार्यक्रम समायोजित हुआ। इष्ट स्तुति के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी कनकरेखाजी ने आध्यात्मिक परिषद को मंगल उद्‌बोधन देते हुए कहा- 'बच्चों का जीवन कोरे कागज के समान होता है। संस्कारों की तुलिखा से हम उस कोरे कागज पर सुंदर रंग-रंगीले चित्र भर सकते हैं। संस्कारों की यह सुंदर फुलवारी, यह नौनिहाल बच्चे हमारे देश का उज्ज्वल भविष्य हैं, घर-परिवार व समाज की संपत्ति है। नई सोच, नई संभावनाओं के सपनों को सच करने के लिए ज्ञानशाला के नन्हें-नन्हें कलाकार अपनी प्रतिभा को उजागर कर रहे हैं। गुरुदेव तुलसी का आयाम है-ज्ञानशाला। इसके माध्यम से बच्चों में संस्कारों का निर्माण किया जाता है।

इस अवसर पर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने सुंदर प्रस्तुतियां देकर पूरी परिषद को भावभिवोर बना दिया। छोटी बालिका कृति जैन, भव्य, तनिश आदि ने विविध रूपों में अपनी प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका लीना गोयल, तेरापंथ महिला मंडल मंत्री प्रिया जैन व बहिनों द्वारा समधुर गीत का संगान किया गया। इस अवसर पर पंजाब प्रांतीय तेरापंथी सभा अध्यक्ष केवल कृष्ण गोयल(सुनाम) व तेयुप अध्यक्ष अरिहन्त गोयल ने अपने विचार रखे। बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए अनेकों पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन पायल जैन ने किया।

बच्चों को करवाया अच्छा और संस्कारी जीवन जीने का संकल्प

पर्वत पाटिया

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा द्वारा निर्देशित ज्ञानशाला दिवस साध्वी हिमश्रीजी के सान्निध्य में पर्वत पाटिया में आयोजित किया गया। कार्यक्रम से पूर्व ज्ञानार्थियों एवं प्रशिक्षकगण द्वारा रैली निकाली गई। शुभारंभ के पश्चात साध्वी चैतन्ययशाजी द्वारा बच्चों को दो-तीन मिनट कायोत्सर्ग करवाया गया। मंगलाचरण ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी द्वारा महाश्रमण अष्टकम से किया गया। इसके बाद ज्ञानशाला के २१ प्रशिक्षकों द्वारा गीतिका की प्रस्तुति हुई। पर्वत पटिया तेरापंथी सभा के मंत्री प्रदीप गंग द्वारा ऐतिहासिक जानकारी बच्चों को दी गई।

शासनश्री साध्वी रामवतीजी द्वारा संस्कार ज्ञान स्वरूप बच्चों को कहानी सुनाई गई। ज्ञानार्थी दिव्यम गुगलिया, कृतिका छाजेड़, मुख्य प्रशिक्षिका प्रिया पुगलिया, सुश्री ज्योति गांधी, आरती भोगर और सीमा बुच्चा द्वारा विविध रूपों में कलात्मक एवं ज्ञानवर्धक प्रस्तुतियां दी गई। कार्यक्रम में सूरत सिटी लाइट से क्षेत्रीय संयोजिका ज्योति मेड़तवाल और अल्का रांका उपस्थित हुए। साध्वी हिमश्रीजी ने पाथेय प्रदान करते हुए बच्चों को अच्छा और संस्कारी जीवन जीने के लिए कुछ संकल्प करवाए। साध्वीश्रीजी ने श्रावक समाज को धार्मिक कार्यों में जुड़ने की प्रेरणा दी। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष रंजना कोठारी द्वारा शुभकामनाएं दी गई। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मुक्तियशाजी द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन प्रशिक्षिका सुमित्रा श्यामसुखा द्वारा किया गया।

अभिभावकों बच्चों को ज्ञानशाला से जुड़ने के लिए करें प्रेरित

कृष्णानगर, दिल्ली

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनिश्री कमलकुमारजी के पावन सानिध्य में ज्ञानशाला दिवस का कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनिश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर मुनिश्री ने अपने पावन उद्‌बोधन में ज्ञानशाला के बच्चों को एक कविता के माध्यम से समझाया कि बच्चों का आचरण कैसा हो और सभी अभिभावकों को अपने बच्चों को ज्ञानशाला से जुड़ने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में ज्ञानार्थियों द्वारा सामूहिक त्रिपदी वंदना, ज्ञानशाला प्रतिज्ञा और ज्ञानशाला गीत का संगान किया गया। ज्ञानशाला की सभी प्रशिक्षिकाओं और कार्यकर्ताओं द्वारा मंगलाचरण में महाश्रमण अष्टकम का संगान किया गया। ज्ञानशाला दिल्ली के संयोजक अशोक बैद ने स्वागत वक्तव्य दिया और ज्ञानशाला के इतिहास और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। बच्चों ने योगा और जीवन विज्ञान पर एक संगीतमय प्रस्तुति, ज्ञानशाला की उपयोगिता पर ब्लॉगर के माध्यम से नाटिका, भक्तामर और डोंट यूज मी जैसे विषयों पर बहुत ही प्रभावी और सराहनीय प्रस्तुतियां दी।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा दिल्ली अध्यक्ष सुखराज सेठिया, पूर्वी दिल्ली तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा सरोज सिपानी, गांधीनगर तेरापंथी सभाध्यक्ष कमल गांधी, तेयुप दिल्ली अध्यक्ष विकास चोरड़िया एवं विकास मंच अध्यक्ष दीपचंद सुराणा ने ज्ञानशाला के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर मुनि कमलकुमारजी के सहवर्ती तपस्वी संत मुनि नमिकुमारजी ने ३३ की तपस्या का प्रत्याखान किया। कार्यक्रम का संयोजन ज्ञानशाला की वरिष्ठ प्रशिक्षिका सुमन भंडारी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18 सितम्बर-24 सितम्बर 2023

मौत से डरो मत, प्रेरणा लो। ऐसा जीवन जीओ, जिससे तुम्हारा अगला जीवन भी अच्छा हो सके।
-आचार्यश्री महाश्रमण

भिक्षु चरमोत्सव पर विशेष

समता साधना के उपासक आचार्य भिक्षु

:: मुनि कमल कुमार ::

आचार्य भिक्षु तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम आचार्य हुए। उनका जीवन साधना का पुंज था। वे एक पुण्यात्मा, धर्मात्मा, धन्यात्मा, महात्मा थे, जिन्होंने अपना संतुलन सदा बना कर रखा। उन्होंने संघर्षों को भी अपनी साधना का अंग बना लिया। गृहस्थावास में भी हमने देखा कि लघुवय में पिताजी का स्वर्गवास हो गया, युवावस्था में पत्नी का स्वर्गवास हो गया, परंतु आपने अपना मनोबल सदा बना कर रखा।

दीक्षा के पश्चात् आपने अपने जीवन को अध्ययन साधना में नियोजित कर दिया। साधना की गहराई और तलस्पर्शी आगमों का अध्ययन ही आपके जीवन को उत्तरोत्तर विकसित करता रहा। पूज्य रघुनाथजी का आप पर पूरा विश्वास था। इसीलिए दीक्षित होते ही उस वट वृक्ष के नीचे आशीर्वाद प्रदान किया कि वटवृक्ष की तरह तेरा विकास हो। ऐसा आशीर्वाद मांगने पर भी नहीं मिलता।

जब आपने स्थानक से अभिनिष्क्रमण किया, तब भी आपको रोषातुर हो, पूज्य रघुनाथजी ने शब्द कहे कि 'आगो थारो पीछो म्हारो।' आचार्य भिक्षु ने उसको भी आशीर्वाद ही माना और उसी का ही यह सुफल हुआ कि आज पूरे जैन समाज में तेरापंथ अपने आप में एक विशेष स्थान बना पाया है।

आचार्य भिक्षु ने प्रारंभ से ही हर प्रतिकूल स्थिति को सहन करने का लक्ष्य बना लिया था । वास्तव में प्रतिकूल स्थिति को सहन करना एक बहुत बड़ी साधना है। ऐसा कोई विरला ही कर पाता है। हम देखते हैं कि अधिक लोग परिस्थितियों को देखकर घुटने टेक देते हैं, पलायन कर जाते हैं, जीवन लीला समाप्त कर देते हैं। वे कभी भी देव दुर्लभ जन्म का आनंद नहीं ले सकते। जो व्यक्ति परिस्थितियों को देखकर उनसे समझौता करना जानता है, वह उज्जवल नक्षत्र के सामान देदिप्यमान बन जाता है।

आचार्य भिक्षु को अनेकानेक प्रतिकूल परिस्थितियों को देखने-समझने का अवसर प्राप्त हुआ। आहार, पानी, स्थान, वस्त्र, औषध ही नहीं, कहीं छाती पर मुक्का मारने वाला मिला, कहीं सिर पर ठोले मारने वाला मिला, कहीं गालियां देने वाला मिला, कहीं अपने क्षेत्र की सीमा से बाहर निकलने वाला मिला। परंतु आचार्य भिक्षु ने उसे जिनवाणी के सहारे हर स्थिति में ज्ञाता द्रष्टाभाव बना कर रखा। इसी कारण से निरंतर गतिमान बने रहे।

आज हम देखते हैं लोगों की आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा बढ़ी है। इसलिए उनका जाप करते हैं, उनकी पुण्यतिथि पर उपवास एवं धम्मजागरण करते हैं। सिरियारी समाधि स्थल पर लोगों का तांता लगा रहता है। परंतु आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों को समझने वाले कम लोग नजर आते हैं। आचार्य भिक्षु के गीत और जयकारों से मानो धरती और आसमान को एक कर देते हैं, परंतु उनकी शुद्ध रीति-नीति को समझने वाले कम हैं। आज आवश्यकता है आचार्य भिक्षु के मूल तत्व को समझने की, जैसे साध्य और साधन की शुद्धता, एक क्रिया से अल्प पाप, बहु निर्जरा, लौकिक और लोकोत्तर धर्म की भिन्नता, मिश्र धर्म की मान्यता आदि-आदि विषयों को गहराई से समझने की।

आचार्य भिक्षु का स्पष्ट मत था कि साध्य को पाने के लिए साधन भी शुद्ध हो। एक क्रिया से या तो धर्म होगा या फिर पाप। एक ही क्रिया से ये दोनों नहीं हो सकते। लौकिक प्रवृत्तियां नितांत आवश्यक होने से भी उसे धर्म न माना जाये। वह लौकिक कर्तव्य है लेकिन पुण्य का बंध धार्मिक क्रिया से ही संभव है, सांसारिक क्रियाओं से वह संभव नहीं है।

आचार्य भिक्षु के विचारों को जिसने उदारता से समझने का प्रयास किया है, वही उनका सच्चा उपासक कहलाने का अधिकारी है। आचार्य भिक्षु के सिद्धांत अकाट्य और सार्वभौम है। तभी यह पंथ निरंतर विस्तार पा रहा है। बीज में जान होती है, तभी पौधा फलवान बन सकता है, ठीक उसी प्रकार आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों में सार भरा हुआ है। इसलिए आज हमें बताते हुए गौरव की अनुभूति होती है कि तेरापंथ धर्मसंघ की इग्यारवीं पीढ़ी चल रही है। प्रत्येक आचार्य ने आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों का पूरी सजगता के साथ सुरक्षा ही नहीं पालना भी की है।

मैनें आचार्य श्री तुलसी को देखा है कि उनका आचार्य भिक्षु के प्रति कितना आदर भाव था। समय-समय पर भिक्षु स्वामी के गीत बनाते ही रहते थे और जनता उन गीतों का संगान कर आध्यात्मिक पोषण प्राप्त करती रहती थी। आचार्य महाप्रज्ञजी ने तो स्वामीजी की निर्वाण स्थली सिरियारी में चातुर्मास करके जन-जन को भिक्षुमय बना दिया। आचार्य महाश्रमणजी को भी मैं देखता हूं कि उनका प्रिय शब्द है 'बाबा'। हर समय आचार्य भिक्षु के प्रति इतने श्रद्धावान रहते हैं, इसीलिए लोग आचार्यश्री महाश्रमणजी को भी भिक्षु स्वामी वत सम्मान देते हैं।

आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आचार्य भिक्षु जन्मस्थली पर आचार्य भिक्षु का ३००वां जन्म दिवस मनाने का निर्णय कर केवल कंटालिया कांठावासियों को ही नहीं,आचार्य भिक्षु के अनुयायियों को एक ऐसा उपहार प्रदान किया है कि लोग युगों-युगों तक भिक्षु स्वामी के साथ आचार्यश्री महाश्रमणजी का भी श्रद्धा-भक्ति के साथ स्मरण करते रहेंगे। मैं आचार्य भिक्षु के २२१ वें महाप्रयाण दिवस पर श्रद्धा से स्मरण-नमन करते हुए कामना करता हूं कि जब तक मुक्ति की प्राप्ति न हो तब तक आपके बताए गये पथ पर निरंतर गतिमान बना रहूं।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला

विजयनगर, बैंगलोर

मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में 'संगठन और दायित्वबोध' विषय पर कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मुनि दीपकुमारजी ने कहा- 'कार्यकर्ता वह होता है जो पद पर नहीं रहकर भी पदासीन व्यक्ति की तरह सक्रिय रुप से कार्य करे। संस्थाओं में कुछ कार्यकर्ता आधी रात को भी काम करने के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे कार्यकर्ता संस्थाओं की नींव के पत्थर होते हैं। कार्यकर्ता में परार्थ की चेतना का विकास, संवेदनशीलता की चेतना और सहिष्णुता के प्रशिक्षण से अनुभव चेतना का विकास होना अपेक्षित है। संगठन में सौहार्द बना रहे, प्रमोद भावना बढ़ती रहे, ऐसा प्रयास करना चाहिये। जहां प्रमोद भावना की कमी होती है, उस संगठन के सर्वांगीण विकास का ग्राफ नीचे चला जाता है। केकड़ावृत्ति नहीं समाज में जटायुवृत्ति जगे।' मुनिश्री ने सभी को शनिवार की सामायिक करने की प्रेरणा दी।

मुनि काव्यकुमारजी ने तेयुप की ओर से चल रही सम्यक दर्शन कार्यशाला के संदर्भ में पाथेय प्रदान किया। कार्यक्रम में जैन स्कोलर्स पाठयक्रम की निर्माता मंजु नाहटा ने 'कर्मवाद' विषय पर प्रेरक विचार रखे। तेरापंथी सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष राकेश पोखरणा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गादिया एवं उपाध्यक्ष बरखा पुगलिया ने भी अपने विचार रखते हुए मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

सक्कत्थुई विद्याकल्प अनुष्ठान

सिकन्दराबाद

तेरापंथ भवन, सिकन्दराबाद में तेरापंथ युवक परिषद्, हैदराबाद द्वारा आयोजित 'सक्कत्थुई विद्याकल्प अनुष्ठान' में संभागी विशाल साधक-समुदाय को साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञाजी ने विविध बीज मंत्रों एवं जैन प्रभावक मंत्रों के साथ विशेष साधना करवाई। इस अनुष्ठान में संभागी साधक-साधिकाओं ने आत्मिक आनन्द एवं ऊर्जा का अनुभव किया।

इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञाजी ने कहा- 'सक्कत्थुई या शक्रस्तुति को प्रणिपात सूत्र भी कहा जाता है। प्रथम अक्षर के आधार पर इसे नमोत्थुणं भी कहते हैं। तीर्थंकरों की अभिवंदना में ६४ इन्द्र सहित असंख्य तीर्थंकर रहते हैं। नमोत्थुणं के रूप में अभिवन्दना का यह पाठ यानि स्वर्गलोक का यह स्तवन हमें तीर्थंकरों की कृपा से प्राप्त है। जो अतीत में था, वर्तमान में है और भविष्य में रहेगा। इस पाठ से दैविक शक्ति अनुप्राणित हो जाती है। प्रबल आस्थाभाव से तरंगों का विकिरण फैलता है।'

आज सम्पूर्ण श्रावक परिवार ने श्रद्धा के साथ इस अनुष्ठान में संभागिता दर्ज की है, उनका लक्ष्य की दिशा में विकास होता रहे। पाप का पुण्य में संक्रमण करने वाला यह अनुष्ठान सबके लिए हितकारी हो। शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रोगों से निजात पाने के लिए नया प्रस्थान हो। सबकी चेतना अमल-विमल, निर्मल बनें।'

तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष निर्मल दूगड़ ने सम्पूर्ण परिषद का स्वागत किया। साध्वीवृंद ने पंचपरमेष्ठी स्तुति प्रस्तुत की। १०८ बार एक लय और एक स्वर में उच्चरित नमोत्थुणं-पाठ से भवन का विशाल प्रांगण गुंजित हो गया। इस कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद अध्यक्ष बाबूलाल बैद, मंत्री सुशील संचेती, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा कविता आच्छा, मंत्री सुशीला मोदी, कार्यक्रम संयोजक दिलीप बरड़िया, तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष विरेंद्र घोषल, कोषाध्यक्ष ललित लुनिया, संगठन मंत्री जिनेंद्र बैद आदि तेयुप सदस्यों के साथ श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। तेयुप मंत्री रविप्रकाश कोटेचा ने आभार ज्ञापित किया।

अधिकरण से बचने के लिए...

शेष पृष्ठ १५ का शेष...

पांचवें गुणस्थान वाला जीव बाल-पंडित कहलाता है, जिसे देश-विरत श्रावक भी कहा जाता है। साधु तो सर्व सावद्य योग के त्यागी होते हैं। गृहस्थ भी अपने जीवन में त्याग, संयम, साधना, स्वाध्याय, जप आदि में अपने समय का नियोजन कर अपनी आत्मा को दुर्गति में जाने से बचा सकते हैं।अव्रत आश्रव को रोकने का साधन है, सावद्य योग का त्याग करना। अशुभ योग का त्याग किया और व्रत संवर उत्पन्न हो गया। त्याग करने से आदमी कई जीवों को अभयदान दे सकता है। अव्रत रूक जाता है। आशा-वांछा पर नियंत्रण हो जाता है। अधिकरण से बचने के लिए अशुभ योग से बचा जाये। पूज्यवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास की विवेचना कराते हुए पूज्य कालूगणी के महाप्रयाण के पश्चात के प्रसंग को विस्तार से व्याख्यायित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

तेरापंथ महिला मंडल के विभिन्न आयोजन

दम्पत्ति कार्यशाला

विजयनगर

तेरापंथ भवन में मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में 'पवित्र रिश्ता सात फेरों का' विषयक दम्पत्ति कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर द्वारा हुआ। मुनि दीपकुमारजी ने उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा- 'भारतीय संस्कृति में दाम्पत्य जीवन आदर्श परम्परा रही है। विश्वास रिश्तों की मजबूती के लिए आधार स्तंभ होता है। विश्वास नहीं है तो सात फेरों का संबंध टूटने में सात मिनट की भी देरी नही लगती। रिश्तों में एक-दूसरे के लिए समय समर्पित करना अपेक्षित होता है। संवाद होते रहना बहुत ही जरूरी है। संवाद से समस्याओं का समाधान हो सकता है। एक-दूसरे की शिकायत न करते हुए धन्यवाद का भाव बना रहना चाहिए। सहनशीलता रिश्ते की अखंडता के लिए सबसे जरूरी है। दाम्पत्य जीवन में एक-दूसरे के प्रति आदर का भाव रखना चाहिए।

कार्यशाला के प्रशिक्षक मुकेश भंडारी ने संवाद, आदर, समय, धैर्य, अपेक्षा और टकराव से बचने की बात कहते हुए अनूठे तरीके से सभी युगलों को एक्टिविटीज करवाई। वीडियो एवं वार्तालाप के माध्यम से दाम्पत्य जीवन में सफलता की बातें बताई। हास्य एवं एक्टिविटी का समावेश भी हुआ। तेयुप अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने स्वागत वक्तव्य दिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा मंजू गादिया ने शुभकामनाएं दी।

प्रशिक्षक मुकेश भंडारी का परिचय कार्यशाला संयोजक तेयुप सहमंत्री संजय भटेवरा ने दिया। कार्यक्रम के प्रायोजक के रूप में मनोहरलाल, राकेश, मुकेश बाबेल, ठीकरवास कलां-बैंगलोर का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री कमलेश चोपड़ा एवं आभार ज्ञापन संगठन मंत्री पवन बैद ने किया।

क्विज प्रतियोगिता

तिरूपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित घो॰चि॰पु॰लि॰ के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल, तिरुपुर द्वारा क्विज प्रतियोगिता का आयोजन साध्वी डॉ॰ गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। बहिनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा नीता सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। ३० भाई-बहिनों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। संभागी भाई-बहिनों के १० ग्रुप बनाए गए। साध्वीश्रीजी द्वारा बहुत ही रोचक तरीके से ७ राउण्ड में प्रतियोगिता संपादित करवाई गई।

इस प्रतियोगिता में तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल के भाई-बहिनों की उत्साहपूर्ण सहभागिता रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया।

रिवाइवल कार्यशाला

लाडनूं

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में रिवाइवल कार्यशाला के अंतर्गत पुरानी पांच ढ़ालों का पुनरावर्तन वृद्ध सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी लक्ष्यप्रभाजी के सान्निध्य में प्रतियोगिता के रूप में करवाया गया। नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत के द्वारा कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। वृद्ध सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी लक्ष्यप्रभाजी ने फरमाया कि इस कार्यशाला के माध्यम से पुरानी ढ़ालों में वर्णित धर्मसंघ के आस्थासिक्त चमत्कारों को जानने और समझने का अवसर तो प्राप्त होता ही है, साथ ही उनको याद करके प्रतिदिन आस्था के साथ संगान करने से हमारे जीवन में भी सकारात्मक प्रभाव हो सकता है।

प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में संरक्षिका संतोष बैद व पूर्व उपाध्यक्ष राज का सहयोग रहा। साध्वी नव्यप्रभाजी के अथक प्रयास से प्रतियोगिता बहुत ही व्यवस्थित रूप से आयोजित हुई। प्रतियोगिता पांच राउंड में आयोजित हुई। पांच-पांच बहिनों के तीन ग्रुप बने। जिनका नाम रखा गया- ज्ञान, दर्शन, चारित्र। कार्यक्रम का संयोजन निवर्तमान मंत्री नीता नाहर ने किया। आभार प्रचार-प्रसार मंत्री मीनाक्षी चोरडिया ने किया। पदाधिकारीगण, कार्यसमिति बहिनों व सदस्य बहिनों की अच्छी उपस्थिति रही।

'पॉवर आफ रेसिलियंस'

सरदारपुरा

साध्वी कुंदनप्रभाजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल, सरदारपुरा द्वारा 'पॉवर आफ रेसिलियंस' और पुरानी ढ़ालों का पुनरावर्तन कार्यशाला का दो चरणों में आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी कुंदनप्रभाजी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष दिलखुश तातेड़ ने स्वागत भाषण द्वारा सभी का अभिनंदन किया।

अर्चना बुरड़ ने रेसिलियंस बढ़ाने के कारगर तरीकों के बारे में बताया। मंत्री चेतना घोड़ावत और मोनिका चोरड़िया ने एक वार्तालाप के माध्यम से बहिनों को अपना पॉवर बढ़ाने के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि महिलाएं किसी प्रकार घर परिवार तथा सामाजिक संस्था के बीच में सामंजस्य स्थापित कर सकती हैं। साध्वी चारित्रप्रभाजी ने पाथेय प्रदान करते हुए उपयोगी टिप्स प्रदान किये।

दूसरे चरण में 'पुरानी ढालों का पुनरावर्तन कार्यशाला' की शुरुआत साध्वी विद्युतप्रभाजी ने की। साध्वीश्रीजी ने बहुत ही रोचक तरीके से एक प्रश्नोत्तरी के माध्यम से प्रतियोगिता करवाई। बहिनों ने बहुत उत्साह से इसमें भाग लिया। सभी बहिनों ने पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दिए। आभार ज्ञापन मंत्री चेतना घोड़ावत ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ॰ प्रियंका बैद ने किया।

परिवर्तन का शंखनाद करने वाला आंदोलन

शुभारंभ

अणुव्रत गीत महासंगान कार्यक्रम के राष्ट्रीय संचालन कक्ष का उद्घाटन

सूरत

साध्वी त्रिशलाकुमारीजी के सान्निध्य में अणुव्रत गीत महासंगान कार्यक्रम के संचालन हेतु नेशनल कंट्रोल रूम का उद्घाटन तेरापंथ भवन सिटी लाइट में किया गया। उल्लेखनीय है कि अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में आगामी दिनांक १८ जनवरी २०२४ को समग्र देश में और विदेशों में भी अणुव्रत गीत के महासंगान का कार्यक्रम आयोजित होने वाला है, जिसमें १८ जनवरी २०२४ को एक ही दिन में एक करोड़ लोग इस गीत का संगान करेंगे। इस संदर्भ में देशभर की सारी गतिविधियों का संचालन करने का दायित्व अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत को प्राप्त होने के कारण इसके संचालन हेतु नेशनल कंट्रोल रूम का शुभारंभ तेरापंथ भवन, सूरत में किया गया। साध्वी त्रिशलाकुमारीजी द्वारा मंगल पाठ सुनाया गया। तत्पश्चात अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने इस कंट्रोल रूम का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने कहा- 'अणुव्रत व्यक्ति-व्यक्ति में परिवर्तन का शंखनाद करने वाला आंदोलन है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम अपनाकर व्यक्ति अपने जीवन को उन्नत बना सकता है। यह व्यक्ति सुधार के द्वारा समाज सुधार एवं समाज सुधार के द्वारा राष्ट्र सुधार का लक्ष्य रखने वाला एकमात्र आंदोलन है। अणुव्रत गीत भी एक क्रांतिकारी गीत है। उसमें किसी भी धर्म या संप्रदाय की बात नहीं है। आचार्यश्री तुलसी द्वारा रचित यह अद्भुत गीत मानवीय एकता, सांप्रदायिक सद्भावना, नैतिकता, अनुशासन, समर्पण, मैत्री भाव एवं राष्ट्र प्रेम को विकसित करने का संदेश देता है। इस गीत का पूरे देश में एवं विदेश में भी एक ही दिन संगान होना विरल प्रसंग होगा।'

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा- 'अणुव्रत गीत के माध्यम से आचार्यश्री तुलसी द्वारा दिया गया नैतिकता, अनुशासन, सांप्रदायिक सद्भावना और कर्तव्य निष्ठा का संदेश जन-जन तक पहुंचाना हमारा लक्ष्य है। अणुव्रत गीत के महासंगान कार्यक्रम एक करोड़ लोग शामिल होने वाले हैं, मैं सभी को इस महासंगान में सहभागिता हेतु अनुरोध करता हूं। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा ने स्वागत वक्तव्य दिया। अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष संचय जैन, महामंत्री भीकमचंद सुराणा, गुजरात प्रभारी अर्जुन मेडतवाल, अतिथि विशेष गणपत भंसाली, तेरापंथी सभा, सूरत अध्यक्ष राजेश मादरेचा, तेयुप अध्यक्ष सचिन चंडालिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा चंदा भोगर व अणुव्रत समिति सूरत के पदाधिकारी अपनी-अपनी टीम के साथ इस अवसर पर उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के मंत्री संजय बोथरा ने किया।

मासखमण तपाभिनंदन समारोह

सिलीगुड़ी

कल्याण मित्र बिशनदयाल गोयल परिवार के सदस्य प्रणय गोयल के मासखमण की तपस्या के तप अभिनंदन समारोह को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांतकुमारजी ने कहा कि त्याग, तपस्या, संयम के द्वारा कर्मो को हल्का किया जा सकता है। तप करने से कर्म कटते हैं, साथ-साथ में पुण्य भी बंधता है। हमें आत्म साधना करनी चाहिए, जिससे पुराने कर्म हल्के हो जाएं और नये पापकर्म से बच जाएं। बिशनदयाल गोयल परिवार के संस्कार पीढ़ी दर पीढ़ी देखने को मिल रहे हैं। पूरा परिवार धर्मसंघ को समर्पित है। रेणु ने अपने परिवार को धर्म के अच्छे संस्कार दिए हैं। प्रणय ने बहुत आत्मबल का परिचय दिया है।' इस अवसर पर प्रणय गोयल के साथ अठाई की तपस्या में उपस्थित निधि गोयल एवं दिव्या छाजेड की तपस्या के प्रति भी मुनिश्री ने आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की।

मुनि कुमुदकुमारजी ने कहा- 'चातुर्मास का यह तीसरा मासखमण सिलीगुड़ीवासियों की श्रद्धा भक्ति का परिचय है।'

साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन मांगीलाल बोथरा एवं साध्वी यशोधराजी, साध्वी आनन्दप्रभाजी के संदेश का वाचन रमेश गोयल ने किया। संस्था शिरोमणी जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के मुख्य न्यासी सुरेश गोयल, तेरापंथी सभा से सुरेन्द्र छाजेड़, तेयुप मंत्री सचिन आंचलिया, अणुव्रत समिति अध्यक्षा डिम्पल बोथरा, टीपीएफ उपाध्यक्ष महावीर बैद, मारवाड़ी युवा मंच के अनिल अग्रवाल, अतुल गोयल, शशि जैन, कीर्ति गोयल, सुप्रभाता अग्रवाल, दीपक महनोत एवं गोयल परिवार की बहिनों ने वक्तव्य एवं गीत के द्वारा तप अनुमोदना की।

विभिन्न संस्थाओं द्वारा अभिनन्दन पत्र, साहित्य एवं स्मृति चिन्ह द्वारा तपस्वियों का अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुदकुमारजी एवं तेरापंथी सभा मंत्री मदन संचेती ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
18 सितम्बर-24 सितम्बर 2023

जिन लोगों के लिए साधु बनना संभव नहीं है, उन्हें कुछ अंशों में संयम को स्वीकारने का प्रयास करना चाहिए।
-आचार्यश्री महाश्रमण

तप अभिनंदन समारोह के विभिन्न आयोजन

औरंगाबाद

मुनि अर्हत्कुमारजी के सान्निध्य में सुरेशचंद-सरोज सेठिया के सुपुत्र एवं पुत्रवधू डॉ० विमलेश-प्रियंका सेठिया के सजोड़े मासखमण तप का अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत में सेठिया परिवार की बहन-बेटियों ने मंगलाचरण किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष कौशिक सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा भावना सेठिया तथा तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अंकुर लूनिया ने भाव अभिव्यक्ति से तपस्वी दंपति का अभिनंदन किया। तपस्वी दंपति के परिवार के बच्चों ने गीत प्रस्तुत किया। तपस्विनी प्रियंका के भाई व माता एवं तपस्वी विमलेश की माता ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत के द्वारा अभिनंदन किया।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा एक बहुत ही रोचक नाटिका प्रस्तुत की गई। तप प्रभारी राजकुमार बांठिया, आचार्यश्री महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति, औरंगाबाद अध्यक्ष सुभाष नाहर ने भी अपने भाव व्यक्त करते हुए तपस्वियों का अभिनंदन किया। मुनि भरतकुमारजी ने तपस्वियों की तपोनुमोदना करते हुए सभी को तपस्या की प्रेरणा दी। मुनि जयदीपकुमारजी ने एक मंगल गीत प्रस्तुत किया। मुनि अर्हत्कुमारजी ने उपस्थित धर्म सभा को तप की महत्ता समझाते हुए सभी को तपस्या हेतु प्रेरित किया एवं तपस्वी दम्पति को मासखमण तप का प्रत्याख्यान कराते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन मुक्ता दुगड़ ने किया।

जलगांव

डॉ० मुनि आलोककुमारजी के सान्निध्य में सिद्धांत सुभाष डागा के मासखमण की तपस्या के प्रत्याख्यान एवं अनुमोदन का कार्यक्रम अणुव्रत भवन में प्रवचन के समय सम्पन्न हुआ। मुनिश्री के इस पावस प्रवास में जलगांव से यह प्रथम मासखमण तप की भेंट है। युवा सिद्धांत डागा ने दृढ़ मनोबल, आत्मबल का परिचय देते हुए मासखमण की तपस्या की। इस कार्यक्रम में तेरापंथी सभा उपाध्यक्ष राजकुमार सेठिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला छाजेड़ ने अपनी भावना प्रकट की। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने व पारिवारिक-आत्मीय संबंधीजन ने गीत एवं अपने वक्तव्यों के द्वारा तपस्वी सिद्धांत के तप का अभिनंदन करते हुए तप अनुमोदना की।

मुनि लक्ष्यकुमारजी ने अपने मंगल उद्बोधन में तप की महिमा बताई। मुनि आलोककुमारजी ने अपने प्रेरणा पाथेय में फरमाया कि जैन धर्म में तपस्या का क्या महत्व है, तपस्या क्यों करनी चाहिए, तपस्या से मानव मात्र के जीवन में क्या परिवर्तन आता है। सुमधुर गायक मुनि हिमकुमारजी ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर तपस्वी भाई के पारिवारिक सदस्यों के साथ श्रावक- श्राविकाएं उपस्थित रहे।

पचरंगी तप अभिनंदन

श्यामनगर, जयपुर

भिक्षु साधना केन्द्र, श्यामनगर में साध्वी मंगलप्रभाजी की पावन प्रेरणा से तीन पचरंगी तपस्या एक साथ सानंद संपन्न हुई। ७५ तपस्वियों का एक साथ तप अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। सभी तपस्वियों तथा उपस्थित विशाल श्रावक समाज को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री ने फरमाया- आज भिक्षु साधना केन्द्र के पावन प्रांगण में एक साथ तीन पचरंगी तपस्या में भाग लेने वाले तपस्वियों की उपस्थिति देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। परम श्रद्धेय महातपस्वी आचायश्री महाश्रमणजी की महत्तीकृपा दृष्टि से श्यामनगर में तप का क्रम हमारे मंगल प्रवेश के समय से ही अनवरत गतिमान है। इस दोनों सावन महिने में पांच पचरंगी तपस्या- दो पहले एक साथ तथा तीन अब एक साथ संपन्न हो रही है, यह गुरु कृपा का ही परिणाम है। हमने गुरुदेव के दीक्षा कल्याणक वर्ष के उपलक्ष में श्रावक-श्राविकाओं से आह्वान किया कि इस चातुर्मास में अधिक से अधिक त्याग-तप की भेंट श्रीचरणों में समर्पित करनी है। हमारी इस प्रेरणा को स्वीकार करके हमारे श्रद्धानिष्ठ, विनीत श्रावक समाज ने अभी तक पांच पचरंगी तथा अन्य अनेक तपस्याओं की भेंट समर्पित की है, इसका मुझे बहुत गौरव है। गुरु के नाम में जादूई शक्ति है। गुरु कृपा से हर असंभव कार्य संभव बन जाता है। अभी जो तपस्या हो रही है, यह गुरु कृपा का ही सुपरिणाम है। मैं सभी तपस्वियों को बहुत साधुवाद देती हूं।' साध्वीश्रीजी ने एक सुमधुर गीत का सामूहिक संगान किया।

इस समारोह में तेरापंथ सभाध्यक्ष हिम्मत डोसी, भिक्षु साधना केन्द्र समिति अध्यक्ष नोरतनमल नखत, उपाध्यक्ष सुरेन्द्र सेठिया, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अमित छल्लाणी, तेरापंथ महिला मंडल सी-स्कीम अध्यक्षा प्रज्ञा सुराणा, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की पूर्वाध्यक्षा पुष्पा बैद ने अपने विचारों की प्रस्तुति देते हुए तपस्या की अनुमोदना की। साध्वी प्रणवप्रभाजी ने अपने सारगर्भित विचार रखे। कार्यक्रम का मंगलाचरण अरूणा बैद ने किया। तेरापंथ महिला मंडल सी स्कीम की बहिनों ने सुंदर गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी समप्रभा ने कार्यक्रम का संचालन कुशलता से किया। पचरंगी तप में रत सुशील नखत ने आभार ज्ञापन किया।

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

गंगाशहर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गंगाशहर के तत्वावधान में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन शासनश्री साध्वी शशिरेखाजी एवं साध्वी ललितकलाजी के पावन सान्निध्य में शांति निकेतन में किया गया। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी शशिरेखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ज्ञानशाला एक बहुत अच्छा उपक्रम है, जिसमें संस्कार निर्माण का कार्य होता है। बालक समाज की नींव, परिवार का आधार एवं राष्ट्र का मेरुदंड है। इसमें संस्कारों का बीजारोपण जरूरी है। ज्ञानशाला एक ऐसा उपक्रम है, जिसके माध्यम से बचपन में ही संस्कारों का बीज वपन किया जाता है, ताकि भविष्य में वटवृक्ष का निर्माण हो सके। बच्चों में कुछ करने की क्षमता होती है, उन्हें अवसर देने की आवश्यकता है। प्रशिक्षिकाएं अपना समय निकालकर श्रम करती है, उन्हें ज्ञान दान देती है। अभिभावक भी ज्ञानशाला के प्रति बहुत आशान्वित व सक्रिय रहते हैं। जिससे बालकों में संस्कार निर्माण का कार्य निरंतर चलता रहता है।

साध्वी ललितकलाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ज्ञानशाला का उपक्रम बच्चों के व्यक्तित्व विकास का माध्यम बनता है। ज्ञानशाला आचार्यश्री तुलसी की देन है। वे दूरगामी दृष्टि के धनी थे। ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चों के व्यक्तित्व का विकास होता है। प्रशिक्षिकाएं बच्चों के लिए मेहनत करती है। माता-पिता का कर्तव्य है की भावी पीढी को संस्कारी किया जाए। वे बच्चों को ज्ञानशाला में भेजकर अपने दायित्व का निर्वहन कर सकते हैं। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानार्थियों द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। प्रशिक्षिकाओं ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। छोटे-छोटे ज्ञानार्थियों द्वारा प्रस्तुत सामायिक का महत्व नाटिका आकर्षण का मुख्य केंद्र रही। प्रशिक्षिका रुचि छाजेड़ ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा संजू लालानी, तेरापंथ युवक परिषद के सहमंत्री ऋषभ लालानी ने अपने विचार व्यक्त किये। तेरापंथी सभा के सहमंत्री पवन छाजेड़ ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सुनीता पुगलिया ने किया।

रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन

मन्ड्या

तेरापंथ युवक परिषद्, मन्ड्या द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन के प्रांगण में आयोजित किया गया। कार्यशाला का प्रारंभ संस्कारक अशोक बुरड़ द्वारा नमस्कार महामंत्र के द्वारा हुआ। संस्कारकों द्वारा रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि से जैन मंत्रोच्चार द्वारा मनाने की विस्तृत जानकारी डेमो के माध्यम से उपस्थित श्रावक समाज को दी गई। संस्कारक अशोक बुरड़ ने कहा कि राखी का धागा सिर्फ धागा नहीं अपितु एक मजबूत सुरक्षा कवच होता है, जो जैन मंत्रों से और अधिक मजबूत बन जाता है। तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक ने संस्कारकों व उपस्थित श्रावक समाज का स्वागत-अभिन्नदन किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष नरेन्द्र दक ने कहा कि अभातेयुप की अनेकों गतिविधियों में जैन संस्कार विधि भी एक महत्वपूर्ण आयाम है, जिसे तेयुप की शाखा परिषदें बखूबी निभा रही है। संस्कारक लक्की श्रीश्रीमाल ने मंडिया श्रावक समाज का आभार व्यक्त किया। संस्कारक विक्रम पितलिया ने श्रावक समाज को रक्षाबंधन जैन विधि से मनाने का आह्वान किया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री कमलेश गोखरू ने किया।

दो दिवसीय ज्ञानशाला शिविर का हुआ शुभारंभ

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में तथा तेरापंथी सभा के तत्वावधान में दो दिवसीय ज्ञानशाला शिविर का शुभारंभ साउथ कोलकाता तेरापंथ भवन में हुआ, जिसमें ७० ज्ञानार्थी व ३३ प्रशिक्षिकाएं उपस्थित थी। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा- 'ज्ञानशाला ज्ञानवृद्धि का उपक्रम है। ज्ञानशाला से संस्कार व चारित्र पुष्ट होते हैं और व्यक्ति बुरी आदतों से बचता है। गुरुदेव तुलसी ने भावी पीढी को सुसंस्कारी बनाने के लिए समाज को नया आयाम दिया, वह है ज्ञानशाला। माता-पिता एवं अभिभावकगण बालक-बालिकाओं को सद्संस्कारी बनाने के लिए उन्हें ज्ञानशाला में भेजें।'

मुनि परमानंदजी ने कहा कि ज्ञानशाला संस्कार निर्माण की शाला है। ज्ञानशाला शिविर में मुनि जिनेशकुमारजी के अतिरिक्त ज्ञानशाला की आंचलिक प्रभारी प्रेमलता चोरड़िया, वीणा सामसुखा, नीता सेठिया, वंदना डागा, बेबी दूगड़, वैशाली श्यामसुखा, रितु बुच्चा, ख्याति बैद, गरिमा बैद, ओंति नाहटा आदि ने प्रशिक्षण दिया। ज्ञानशाला शिविर में साउथ कोलकाता, साउथ हावड़ा, पूर्वांचल, हिंद मोटर, राजरहाट, उत्तर हावड़ा, टॉलीगंज आदि क्षेत्रों के बच्चे उपस्थित थे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ मेडिकल का शुभारंभ

बारडोली

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् बारडोली द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के अंतर्गत अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा की अध्यक्षता में जैन संस्कार विधि से आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल का शुभारंभ किया गया। इस मांगलिक घड़ी में साध्वी सोमयशाजी ने मंगल पाठ द्वारा अपनी आध्यात्मिक मंगल कामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम में अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रथम रमेश डागा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वितीय जयेश मेहता, महामंत्री पवन मंडोत, सहमंत्री प्रथम अनंत बागरेचा, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा की गरिमामय उपस्थिति रही। अभातेयुप उपाध्यक्ष एवं जैन संस्कारक जयेश मेहता तथा सूरत से समागत मनीष मालू ने जैन संस्कार विधि से शुभारंभ की प्रक्रिया संपन्न करवाई। तेरापंथ युवक परिषद, बारडोली अध्यक्ष संजय बड़ोला, मंत्री राहुल सामरा एवं टीम तथा अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य रौनक सरणोत, तेरापंथी सभा, बारडोली अध्यक्ष राजेंद्र बाफना, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेश चोरड़िया, टीपीफ अध्यक्ष सुशील सरणोत, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा धर्मिष्ठा मेहता, निवर्तमान अध्यक्ष साहिल बाफना, तेरापंथ किशोर मंडल ब्लू ब्रिगेड से उत्सव मेहता, अंकुर बाफना आदि की उपस्थिति रही। बारडोली के द्वितीय आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल के शुभारंभ पर राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने कहा कि छोटे से क्षेत्र में दो मेडिकल स्टोर का शुभारंभ होना बहुत बड़ी बात है एवं अन्य क्षेत्रों के लिये अनुकरणीय है। उन्होंने पूरी परिषद टीम एवं सबंधित कार्यकर्ताओं को साधुवाद देते हुए मंगलकामना व्यक्त की।

जैन विश्व भारती के वार्षिक अधिवेशन का हुआ आयोजन

मोक्ष प्राप्ति के लिए आठों कर्मों का क्षरण आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य कालूगणी के द्वारा संवत्सरी को किए गए पारणे और उपवास के प्रसंग को व्याख्यायित करते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण

५ सितम्बर, २०२३
नन्दनवन-मुम्बई

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के चौदहवें उद्देशक के सातवें सूत्र में अनेक प्रकार के विषय बताये गये हैं। यह आगम तत्त्व ज्ञान से भरा पड़ा है। भगवती सूत्र और पन्नवणा सूत्र मानो तत्त्वज्ञान से भरी दोनों बहने हैं।

भगवती सूत्र में देवों के अनेक प्रकार बताये गये हैं। देवों में सर्वोत्तिष्ट देव अनुत्तरोपातिक देव होते हैं। प्रश्न किया गया कि इन देवों को अनुत्तरोपातिक देव क्यों कहा जाता है? उत्तर दिया कि उनके अनुत्तर शब्द, अनुत्तर गंध, अनुत्तर रस और अनुत्तर स्पर्श उपलब्ध होते हैं। फिर प्रश्न किया गया कि इतने ऊपर पहुंचने के बाद भी क्या कारण हुआ कि वे मोक्ष में नहीं जा सके और देवगति में उत्पन्न होना पड़ा? कितने कर्म उनके शेष रह गये थे?

उत्तर दिया गया कि उनके बहुत थोड़े से कर्म शेष रह गये थे। जैसे एक श्रमण अगर एक बेला (दो दिन का उपवास) कर जितने कर्म क्षय करता है, उतने कर्म शेष रहे थे, पर उनके पास दो दिन का भी समय नहीं रहा, आयुष्य पूर्ण हो गया। ऐसी स्थिति में उन्हें अनुत्तरोपातिक देव के रूप में पैदा होना पड़ा। मोक्ष प्राप्ति के लिए आठों कर्मों का क्षरण आवश्यक होता है।

आचार्यवर ने इस प्रसंग के माध्यम से प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि साधु का धन तपस्या, साधना और संवर है, उसका पालन हो। तपस्या-संवर ऐसा धन है कि वो महाधनी होते हैं। साधु के पांच महाव्रत अमूल्य रत्न हैं। इसके सामने गृहस्थों के करोड़ों के हीरे भी ना कुछ के समान होते हैं। साधना और महाव्रतों की तुलना में इनका कोई मूल्य नहीं होता। वे सौभाग्यशाली होते हैं, जिन्हें साधुपना प्राप्त हो जाता है। क्षयोपशम के बिना, भाग्य के बिना साधुपना प्राप्त नहीं होता। साधुपना प्राप्त होने के बाद शुद्ध रूप से साधुपना पालने वाला धन्य-धन्य हो जाता है। धर्म की सम्पति गृहस्थ जीवन में भी बढ़ती रहे। उसके लिए सम्यकत्व के साथ त्याग-तपस्या का विकास हो। बारहव्रती श्रावक बनें, शुभ भाव में रहें। श्रावक के तीन मनोरथ होते हैं। एक उम्र के बाद परिग्रह का अल्पीकरण कर हल्का बनने का प्रयास करें। साधुपना आ जाये, ऐसी भावना रखें। अंतिम समय संलेखना-संथारे में जाये। परिणाम शुद्ध रहे। आगे भी आत्मा अच्छी रहे। परिवार से निवृत्ति ले धर्म-अध्यात्म की साधना करें। वह हमारे लिए श्रेयस्कर हो सकता है।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास का रसास्वाद कराते हुए पूज्य कालूगणी के द्वारा संवत्सरी को किये गये उपवास और पारणे के प्रसंग को व्याख्यायित किया।

जैन विश्व भारती के वार्षिक अधिवेशन का आयोजन पूज्यवर की सन्निधि में हुआ। पूज्यवर ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन विश्व भारती की यात्रा प्रवर्धमान है। गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का तो कितना प्रवास वहां हुआ था। आचार्यश्री तुलसी ने तो लगातार दो चातुर्मास वहां पर किये। ऐसा लगता है जैन विश्व भारती ने काफी विकास किया है। सरलता से सारे कार्य गतिमान हैं। समणियों का भी मुख्यालय है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में मुमुक्षु बहनों का अध्ययन भी चलता है। एक अच्छी सम्पदा तेरापंथ समाज को प्राप्त है। यह संस्था बहुआयामी और महत्वपूर्ण है। यह संस्था धार्मिक, आध्यात्मिक प्रगति करती रहे। पूज्यवर ने तपस्वियों को तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के संसारपक्षीय अग्रज सूरजकरण दूगड़ के सुपुत्र ३६ वर्षीय सुपुत्र नरेश दूगड़ के आकस्मिक देहावसान के संदर्भ में उनके परिजन संबल प्राप्ति हेतु गुरु सन्निधि में उपस्थित हुए। दूगड़ परिवार एवं परिजनों की ओर से स्व॰ नरेश दूगड़ के पिताजी सूरजकरण दूगड़, श्रीचंद दूगड़, महेन्द्र दूगड़, ललित दूगड़, तेजकरण दूगड़, कमल दूगड़, विमल दूगड़, धर्मचन्द गुलगुलिया, लखपत गुलगुलिया एवं विजय बोथरा ने दिवंगत नरेश दूगड़ के सद्गुणों को याद करते हुए उनकी आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित की। आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा, मुम्बई सभा के पूर्व अध्यक्ष भंवरलाल कर्णावट, सुमतिचंद गोठी एवं मरुधर मित्र परिषद के अध्यक्ष अशोक सिंघी ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए परिवारजन के प्रति संवेदना के भाव व्यक्त किये।

साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, मुख्य मुनिश्री महावीरकुमारजी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी एवं स्व॰ नरेश दूगड़ की संसारपक्षीया बहिन साध्वी चारित्रयशाजी व साध्वी सुमतिप्रभाजी ने भी दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी आध्यात्मिक मंगलकामना अभिव्यक्त की।

पूज्यवर ने आध्यात्मिक संबल प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारी सृष्टि की कुछ नियम-व्यवस्थाएं हैं, ऐसा प्रतीत हो रहा है। आत्मा जन्म लेती है तो जन्म के साथ मृत्यु का अनिवार्यतया संबंध होता है। पता नहीं कितने पिछले जन्मों के बन्धे कर्म उदय में आ जाते हैं। शुभ-अशुभ स्थितियां आ सकती है। अच्छे प्राणी की देवों को भी कामना रहती है। दूगड़ परिवार में युवावस्था का व्यक्ति चला गया, मेरा संसारपक्षीय भतीजा था। वैसे पूरा संघ हमारा परिवार है। मृत्यु का होना निश्चित है, पर कब होगी, जानना अनिश्चित है।

ज्ञानी को कुछ ज्ञान हो भी जाये तो भी ऐसी बात प्रकट न करना ही अच्छा है। आदमी समता और शक्ति में रहे। नियति के नियम के आगे झुकना ही होता है। एक घटना से परिवार में अनेक सदस्य प्रभावित हो सकते हैं। संसार के रिश्ते जन्म-मरण की परम्परा के साथ जुड़े रहते हैं। आदमी अल्प आयुष्य प्राप्त कर भी प्रिय हो सकता है। आत्मा शाश्वत है, संयोग-वियोग जुड़े रहते हैं। ऐसी स्थिति में सभी पारिवारिकजन समता, शान्ति और मनोबल बनाए रखें। दिवंगत आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

तेरापंथ धर्मसंघ की बहुआयामी और महत्वपूर्ण सम्पदा है जैन विश्व भारती संस्था

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचन्द लूंकड़ एवं मंत्री सलिल लोढ़ा ने संस्था की गति-प्रगति का विवरण एवं आगामी योजनाओं की अवगति प्रस्तुत की। जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्तिकुमारजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यवर को संस्था का प्रतिवेदन निवेदित किया गया। जैन विश्व भारती द्वारा संचालित पुस्कारों की घोषणा मंत्री सलिल लोढ़ा द्वारा की गई, जो अग्रलिखित है।

जैन विश्व भारती द्वारा संचालित पुरस्कार घोषणा सूची

आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा सम्मान
- राजगुरु राकेशभाई, सद्गुरु आश्रम, सूरत

प्रज्ञा पुरस्कार
- राजकुमार नाहटा, दिल्ली

आचार्य तुलसी अनेकान्त सम्मान
- बनेचंद मालू, कोलकाता

संघ सेवा पुरस्कार
- ख्यालीलाल तातेड़, मुंबई एवं किशनलाल डागलिया, मुंबई

जैन विद्या पुरस्कार
- प्रेमलता सिसोदिया, मुंबई

जय तुलसी विद्या पुरस्कार
- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी बाल विहार, चुरू

अधिकरण से बचने के लिए अशुभ योग से बचने का प्रयास हो : आचार्यश्री महाश्रमण

७ सितम्बर २०२३,
नन्दनवन-मुम्बई

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के सोलहवें उधेशक प्रथम शतक में प्रश्न किया गया है कि भन्ते! जीव अधिकरणी है या अधिकरण है? उत्तर दिया गया कि जीव अधिकरणी भी होता है, अधिकरण भी है। प्रतिप्रश्न किया गया कि किस कारण से? उत्तर दिया गया कि अविरति के कारण से ऐसा होता है। अधिकरण का मतलब है, जो दुर्गति में ले जाने वाली चीज है, जो दुर्गति में निमित्त बनती है। उसमें शरीर, इन्द्रियां, शस्त्र, प्रयोग आदि चीजें निमित्त बन जाती है। शरीर, इन्द्रियां अधिकरण भी बन सकते हैं तो यह शरीर धर्म की साधना का साधना भी बन सकता है। यह शरीर दुर्गति का निमित्त भी बन सकता है तो शरीर धर्म का साधन भी बन सकता है। यह जीव पर निर्भर होता है कि इस शरीर को दुर्गति का साधन बनाया जाता है या धर्म, मोक्ष व सुगति का साधन बनाया जाता है।

अप्रमत्त साधु के लिए उस अवस्था में यह शरीर दुर्गति का साधन नहीं बन सकता। असंयमी पापी है, उनका यह शरीर दुर्गति का साधन भी बन सकता है। शरीर तो जड़ है, मूल कारण है अविरति। अविरति की अपेक्षा से जीव को बाल भी कहा जाता है तो विरति की अपेक्षा से जीवन पंडित भी कहलाता है। विरति-अविरति का मिश्र रूप है। उसकी अपेक्षा से जीव बाल-पंडित कहलाता है। गुणस्थान वाला जीव पंडित कहलाता है।

शेष पृष्ठ १२ पर

व्यक्ति पुण्योदय के दिनों में भी प्रमाद में न जाए, जागरूक रहे, सत्ता, संपत्ति आदि का दुरुपयोग न करें।

-आचार्यश्री महाश्रमण

उपयोगी और निष्पत्तिमूलक उपक्रम है ज्ञानशाला - आचार्यश्री महाश्रमण

पुज्यगुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी की सन्निधि में अपने भावों की अभिव्यक्ति देते असम के राज्यपाल महामहिम गुलाबचंद कटारिया

03 सितम्बर 2023
नन्दनवन-मुम्बई

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी का रसास्वादन कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में नरक-देव गति आदि के बारे में बताया गया है। पाप करने वाले प्राणी नरक में जाते हैं। अच्छे कर्म करने वाले प्राणी स्वर्ग में जाते हैं। नरक में एक अप्रिय-अनिष्ट शब्द, रूप, रस, गंध आदि नारकीय जीवों को मिलती है। नारकीय जीव अपना पुरूषार्थ भी अनिष्ट करते हैं। असुरकुमार आदि देवता इसके विपरीत इष्ट शब्द, इष्ट रूप आदि का अनुभव करते हैं। उनका उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पराक्रम भी इष्ट होता है। आदमी को यह चिन्तन करना चाहिये कि सौभाग्य से मुझे मनुष्य जन्म मिला है। मैं ऐसे कार्य न करूं, जिससे मुझे नरक में जाना पड़े। मैं अच्छे मार्ग पर चलूं।

ज्ञानशाला दिवस पर ज्ञानार्थियों को सम्बोध प्रदान कराते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि ज्ञानशाला के माध्यम से बालपीढ़ी में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण हो सकता है। बच्चों में ज्ञान बढ़ने के साथ अच्छे संस्कार भी आये। बालपीढ़ी संस्कारित होगी तो देश का भविष्य अच्छा हो सकता है।

ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चों में धर्म का ज्ञान और अच्छे संस्कार आ जाये तो बहुत अच्छा काम हो सकता है। ज्ञानशाला उपयोगी, महत्वपूर्ण और निष्पतिमूलक उपक्रम है। अच्छे धार्मिक, आध्यात्मिक संस्कार मिल जाये तो भावी पीढ़ी अच्छी हो सकती है। कितने प्रशिक्षक ज्ञान देने का प्रयास करते हैं। गुरुदेव तुलसी के समय शुरु हुई ज्ञानशाला वर्तमान में भी उपयोगी बनी हुई है और प्रगति कर रही है।

ज्ञानशाला दिवस

बालपीढ़ी में अच्छे संस्कारों का माध्यम है ज्ञानाशाला

असम राज्य के राज्यपाल महोदय गुलाबचन्द कटारिया आचार्य प्रवर की पावन सन्निधि में सपरिवार उपस्थित हुए। पूज्यवर ने राज्यपाल महोदय को संबोधित करते हुए फरमाया कि राजनीति भी एक सेवा का कार्य है। सबके जीवन में अहिंसा, नैतिकता के संस्कार हों। वर्तमान में हमारी अणुव्रत यात्रा चल रही है। अणुव्रत के संकल्प जैन-अजैन कोई भी अपना सकते हैं। अणुव्रत से अच्छे संस्कार जगाने का प्रयास किया जा सकता है। कटारियाजी से पुराना सम्पर्क है। वे आध्यात्मिक-नैतिक सेवा करते रहें।

राज्यपाल महोदय गुलाबचन्द कटारिया ने कहा कि मैं भाग्यशाली हूं कि मैंने गुरुदेव तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री महाश्रमणजी को नजदीक से देखा है, सुना है और उनसे कुछ मार्गदर्शन लेने का भी प्रयास किया है। मेरा सौभाग्य है कि असम के राज्यपाल का दायित्व संभालने के बाद आज पहली बार आपके दर्शन का सुअवसर प्राप्त हुआ है। मैं जैन कुल में पैदा हुआ हूं और अपने आचरण से भी जैन हूं। जैन धर्म के नियमों को पालते हुए मैं राजनीति का कार्य कर रहा हूं। आचार्यश्री तुलसी के अणुव्रत गीत के सारे गुण हमारे में आ जाये। अणुव्रत के माध्यम से आचार्यश्री तुलसी ने भटके हुए लोगों को जोड़ने का प्रयास किया है। आपकी अहिंसा यात्रा से भी आम आदमी जुड़ा है। मैं भी मेरे कार्य ईमानदारी से करता रहूं, यही आपसे आशीर्वाद चाहता हूं। संस्कारविहीन शिक्षा का कोई मूल्य नहीं है। आपने असम में भी पैदल यात्रा कर लोगों को शांति का संदेश दिया था। मैं धर्मसंघ का श्रावक बनकर देश के लिए, पार्टी के लिए कार्य करूंगा।

ज्ञानशाला दिवस पर उद्बोधन प्रदान करते हुए साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने फरमाया कि वर्तमान भौतिक जीवनशैली के कारण बच्चों में कई बुरी स्थितियां आ रही है। बच्चे मानसिक एवं भावनात्मक रूप से कमजोर हो रहे हैं। गुरुदेव तुलसी ने ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चों के आध्यात्मिक विकास के लिए एक नया प्रकल्प दिया। ज्ञानशाला में छोटे बच्चों को अच्छे संस्कार दिये जाते हैं, जिससे उनका भावी जीवन अच्छा हो एवं उनका गुणात्मक विकास हो।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने फरमाया कि मनुष्य जीवन एक बहुत सुन्दर उद्यान है। इसकी सुरक्षा के लिए इन्द्रिय संयम की बाड़ अपेक्षित है। असंयम से आदमी पाप में लिप्त रहता है। हम रति (असंयम) में न उलझें। अरति (त्याग-संयम) की आराधना करें।

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल

मेरा कार्य ईमानदारी से करता रहूं, आचार्यश्री से ऐसा आशीर्वाद चाहता हूं...
- गुलाबचंद कटारिया, राज्यपाल, असम

तातेड़, शान्तिलाल नान्द्रेचा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथी सभा, मुंबई के कार्याध्यक्ष नवरतनमल गन्ना एवं ज्ञानशाला की अंचालिक संयोजिका अनिता परमार ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने सुमधुर कव्वाली, कंठस्थ ज्ञान, पच्चीस बोल, भक्तामर, तेरापंथ प्रबोध, प्रतिक्रमण आदि विभिन्न प्रस्तुतियां दी। व्यवस्था समिति द्वारा महामहिम राज्यपाल महोदय का सम्मान किया गया। पर्युषण पर्वाराधना के नन्वान्हिक कार्यक्रम का कार्ड पूज्यवर को सादर निवेदित किया गया। पूज्यवर ने आशीर्वचन फरमाया।

हेमा डांगी ने सिद्धितप के अन्तर्गत ८ की तपस्या का प्रत्याख्यान पूज्यवर से ग्रहण किया। पूज्यवर ने अन्य तपस्याओं के प्रत्याख्यान करवाये। आचार्यप्रवर के मंगलपाठ और राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

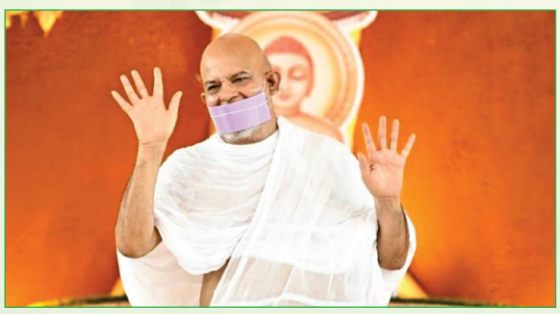

नंदनवन मुम्बई, चातुर्मास

झलकियां...

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

:: महत्वपूर्ण सूचना ::

सभी सभा-संस्थाओं एवं क्षेत्रों से निवेदन है कि पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के नौ दिन में आयोजित कार्यक्रमों के संवाद संयुक्त रूप से भेजें, क्योंकि प्रतिदिन अलग-अलग भेजी गई न्यूज को प्रकाशित कर पाना संभव नहीं हो पाएगा। कृपया नौ दिन के पश्चात् संयुक्त रूप से संवाद भेजें। आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। -कार्यकारी संपादक